NEXT IAS

नैतिकता, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

सिविल सेवा परीक्षा 2027

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालयः 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्रः 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विज़िट करें: www.madeeasypublications.org

नैतिकता, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

© कॉपीराइटः Made Easy Publications Pvt. Ltd.

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करणः 2024
द्वितीय संस्करणः 2025
तृतीय संस्करणः 2026

विषयसूची

नैतिकता, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

अध्याय 1

नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध
(Ethics and Human Interface) 1

1.1 नीतिशास्त्र का परिचय (Introduction to Ethics) 1
- 1.1.1 नीतिशास्त्र का विकास (Evolution of Ethics) 1
- 1.1.2 नीतिशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता (Need to Study Ethics) 3
- 1.1.3 नीतिशास्त्र में विभिन्नता (Differentiating Ethics) 4
- 1.1.4 सही और गलत के स्रोत (Sources of Right and Wrong) 5

1.2 नैतिक निर्णयन (Ethical Decision Making) 6
1.3 नीतिशास्त्र के आयाम (Dimensions of Ethics) 6
1.4 गैर-मानकीय दृष्टिकोण (Non-Normative Approaches) 7
- 1.4.1 अधि-नीतिशास्त्र (Meta Ethics) 7

1.5 मानकीय नीतिशास्त्र (Normative Ethics) 7
- 1.5.1 सामान्य मानकीय नीतिशास्त्र (General Normative Ethics) 7
- 1.5.2 व्यावहारिक या अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics) 10

1.6 सार्वजनिक और निजी संबंधों में नीतिशास्त्र (Ethics in Public and Private Relationships) 18

अध्याय 2

मूल्य (Values) 20

2.1 परिचय (Introduction) 20
- 2.1.1 परिभाषा (Definition) 20

2.2 मूल्यों के प्रकार (Types of Values) 21
- 2.2.1 पदानुक्रमिक व्यवस्था (Hierarchical Arrangement) 21

2.3 मूल्यों की मुख्य विशेषताएँ (Main Features of Values) 22
2.4 मूल्यों का महत्त्व (Importance of Values) 22
2.5 मूल्यों के कार्य (Functions of Values) 22
2.6 मूल्यों की सार्वभौमिकता (Universality of Values) 23
- 2.6.1 सार्वभौमवाद बनाम सापेक्षवाद (Universalism v/s Relativism) 23
- 2.6.2 सार्वभौमिक मूल्य (Universal Values) 23

2.7 मूल्यों को अंतर्निविष्ट करना (Inculcating Values) 24
2.8 समसामयिक विश्व में मूल्य संकट (Value Crisis in Contemporary World) 27
- 2.8.1 परिचय (Introduction) 27
- 2.8.2 मूल्य संकट के कारण (Reasons for Value Crisis) 28

2.9 मूल्यों की पुनर्स्थापना (Restoration of Values) 29
2.10 प्रमुख व्यक्तित्व से सीख (Lessons from Personalities) 29
- 2.10.1 भारतीय नेतृत्वकर्ता (Indian Leaders) 29
- 2.10.2 विश्व के अन्य देशों के नेतृत्वकर्ता (Leaders around the World) 37

अध्याय 3

अभिवृत्ति (Attitude) 39

3.1 परिचय (Introduction) 39
- 3.1.1 परिभाषा (Definition) 39
- 3.1.2 अवयव (Components) 39
- 3.1.3 तुलना (Comparison) 39

3.2 अभिवृत्ति के प्रकार (Types of Attitude) 40
3.3 अभिवृत्ति के कार्य (Functions of Attitude) 41
3.4 अभिवृत्ति की विशेषताएँ (Properties of Attitude) 41
3.5 नैतिक अभिवृत्ति (Moral Attitude) 42
3.6 अभिवृत्ति-व्यवहार संबंध (Attitude-Behaviour Relationship) 42

3.7 पूर्वाग्रह और भेदभाव (Prejudice and Discrimination) 43
3.7.1 पूर्वाग्रह (Prejudice) 43
3.7.2 भेदभाव (Discrimination) 44
3.8 सिविल सेवा में अभिवृत्ति (Attitude in Civil Services) 44
3.9 अभिवृत्ति निर्माण के सिद्धांत (Theories of Attitude Formation) 45
3.10 संज्ञानात्मक विसंगति (Cognitive Dissonance) 46
3.11 सामाजिक प्रभाव (Social Influence) 46
3.11.1 परिचय (Introduction) 46
3.11.2 स्रोत (Sources) 46
3.11.3 प्रकार (Types) 47
3.11.4 सामाजिक प्रभाव के सिद्धांत (Principles of Social Influence) 48
3.12 अनुनयन या अनुनय (Persuasion) 48
3.12.1 प्रक्रिया (Process) 49
3.12.2 अनुनयन और अभिवृत्ति परिवर्तन (Persuausion and Attitude Change) 49
3.12.3 किसी व्यक्ति को अधिक अनुनयात्मक बनाने वाले कारक (Factors Making an Individual more Persuasive) 50
3.12.4 अनुनयन का विरोध (Resisting Persuasion) 51

अध्याय 4

सिविल सेवा के लिए अभिरुचि (अभिक्षमता) और बुनियादी मूल्य

(Aptitude and Foundational Values for Civil Service) 53
4.1 अभिरुचि या अभिक्षमता (Aptitude) 53
4.2 सिविल सेवाओं के आधारभूत मूल्य (Foundational Values of Civil Services) 53
4.3 सिविल सेवाओं में मूल्यों पर द्वितीय एआरसी (2nd ARC on Values in Civil Services) 57

अध्याय 5

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) 59
5.1 भावनाओं का परिचय (Introduction to Emotions) 59
5.1.1 परिभाषा (Definition) 59
5.1.2 पॉल एकमैन की आधारिक मूल भावनाएँ (Paul Ekman's Basic Emotions) 59
5.1.3 भावना के कार्य (Functions of Emotion) 59
5.2 भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) 61
5.2.1 परिचय (Introduction) 61
5.2.2 परिभाषाएँ (Definitions) 62
5.3 भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्त्व (Significance of EI) 66
5.4 कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence at Work Place) 68
5.5 शासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence in Governance) 68
5.6 भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नेतृत्व (Emotional Intelligence and Leadership) 69
5.7 भावनात्मक बुद्धिमत्ता के नकारात्मक पक्ष (Downsides of Emotional Intelligence) 70

अध्याय 6

नैतिक विचारक और दार्शनिक

(Moral Thinkers and Philosophers) 72
6.1 परिचय (Introduction) 72
6.2 पाश्चात्य (Western) 72
6.2.1 सुकरात (Socrates) 72
6.2.2 प्लेटो (Plato) 72
6.2.3 अरस्तू (Aristotle) 73
6.2.4 इमैनुअल कांट (Immanuel Kant) 74
6.2.5 जेरेमी बेंथम (Jeremy Bentham) 75
6.3.6 जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill) 76
6.2.7 एपिकुरस (Epicurus) 77
6.2.8 थॉमस हॉब्स (Thomas Hobbes) 78
6.2.9 जॉन लॉक (John Locke) 78
6.2.10 जीन-जैक्स रूसो (Jean-Jacques Rousseau) 79
6.2.11 जॉन रॉल्स (John Rawls) 80
6.2.12 कन्फ्यूशियस (Confucius) 81
6.2.13 कार्ल मार्क्स (Karl Marx) 82
6.2.14 हेगेल (Hegel) 83
6.2.15 कैरोल गिलिगन (Carol Gilligan) 84
6.2.16 थॉमस जेफरसन (Thomas Jefferson) 84
6.2.17 थॉमस एक्विनास (Thomas Aquinas) 85

6.5.18 एल्टन मेयो (Elton Mayo)....86
6.5.19 मैरी पार्कर फॉलेट (Mary Parker Follett).....87
6.5.20 मैक्स वेबर (Max Weber)....88
6.5.21 डायोजनीज (Diogenes) 89
6.5.22 हेनरी डेविड थोरो (Henry David Thoreau) .90
6.5.23 जॉन डेवी (John Dewey) 91
6.5.24 विलियम जेम्स (William James) 91
6.5.25 आर्थर शोपेनहावर (Arthur Schopenhauer) .92
6.5.26 ऑगस्टीन ऑफ हिप्पो (Augustine of Hippo)93
6.5.27 मैकियावेली (Machiavelli) 93
6.5.28 मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट (Mary Wollstonecraft) .94

6.3 भारतीय (Indian)....95
6.3.1 आदि शंकराचार्य (Adi Shankaracharya) 95
6.3.2 चाणक्य (Chanakya)....96
6.3.3 महात्मा गाँधी (Mahatma Gandhi) 97
6.3.4 बुद्ध (Buddha)....97
6.3.5 स्वामी दयानंद सरस्वती (Swami Dayanand Saraswati)....99
6.3.6 स्वामी विवेकानंद (Swami Vivekananda)....99
6.3.7 राजा राममोहन रॉय (Raja Ram Mohan Roy) 100
6.3.8 दलाई लामा (Dalai Lama)....101
6.3.9 तिरुवल्लुवर (Thiruvalluvar)....102
6.3.10 रवींद्रनाथ टैगोर (Rabindranath Tagore)...103
6.3.11 अरबिंदो घोष (Aurobindo Ghosh)....104
6.3.12 जवाहरलाल नेहरू (Jawaharlal Nehru) 104
6.3.13 अमर्त्य सेन और नीतिशास्त्र के प्रति उनका क्षमता दृष्टिकोण (Amartya Sen - his Capabilities Approach to Ethics)....105

अध्याय 7

लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र (Public/Civil Service Values and Ethics in Public Administration) 107

7.1 लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र का परिचय (Introduction to Ethics in Public Administration)....107
7.1.1 लोक प्रशासन (Public Administration).....107
7.1.2 लोक प्रशासन में नैतिकता की आवश्यकता (Need for Ethics in Public Administration) 107
7.1.3 लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्त्व (Determinants of Ethics in Public Administration) 107
7.1.4 लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र की स्थिति (Status of Ethics in Public Administration) 108

7.2 नैतिक चिंताएँ तथा दुविधाएँ (Ethical Concerns and Dilemma)....109
7.2.1 नैतिक दुविधा की शर्तें (Conditions for Ethical Dilemma)........109
7.2.2 लोक सेवकों के समक्ष उत्पन्न होने वाली नैतिक दुविधाएँ (Ethical Dilemmas Faced by Public Servants) 109
7.2.3 निजी क्षेत्र में नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ (Ethical Concerns and Dilemma in the Private Sector)....110
7.2.4 नियोक्ता-कर्मचारी संबंधों से जुड़े नैतिक मुद्दे (Ethical Issues Related to Employer-Employee Relationship)......111

7.3 नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत (Sources of Ethical Guidance) 112
7.3.1 नैतिकता के स्रोत के रूप में विधि (Laws as a Source of Ethics)....112
7.3.2 कानून और नीतिशास्त्र के बीच संबंध (Relationship between Law and Ethics) 112
7.3.3 नैतिकता के स्रोत के रूप में अंतरात्मा (Conscience as a Source of Ethics) ...113
7.3.4 विधि और नियम का अंतरात्मा से संघर्ष (When Laws and Rules are in Conflict with Conscience)....114

7.4 उत्तरदायित्व तथा नैतिक शासन (Accountability and Ethical Governance).........114
7.4.1 उत्तरदायित्व का परिचय (Introduction to Accountability) 114
7.4.2 शासन के प्रति उत्तरदायित्व का महत्त्व (Importance of Accountability to Governance) 114
7.4.3 उत्तरदायित्व के प्रकार (Types of Accountability)....115
7.4.4 उत्तरदायित्व लागू करने की रणनीति (Strategy to Enforce Accountability)...117

7.5 शासन में नीतिशास्त्रीय और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना (Strengthening of Ethical and Moral Values in Governance) 118

7.6 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिक मुद्दे और वित्तपोषण (Ethical Issues in International Relation and Funding) 119

7.6.1 परिचय (Introduction) 119

7.6.2 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नीतिशास्त्रीय सिद्धांत (Principles of Ethics in International Relations) 120

7.6.3 निहित नैतिक मुद्दे (Ethical Issues Involved) 120

7.7 अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषण का नीतिशास्त्र (Ethics of International Funding) 122

7.7.1 विदेशी सहायता का मामला (Case for Foreign Aid) 122

7.7.2 विदेशी सहायता के विरुद्ध मामला (Case against Foreign Aid) 122

अध्याय 8

कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था (Corporate Governance) 123

8.1 व्यावसायिक नीतिशास्त्र का परिचय (Introduction to Business Ethics) 123

8.2 प्रबंधन प्रथाओं में नीतिशास्त्र का महत्त्व (Importance of Ethics in Management Practices) 123

8.3 कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था (Corporate Governance) 124

8.3.1 परिचय (Introduction) 124

8.3.2 अच्छी कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था के सिद्धांत (Principles of Good Corporate Governance) 125

8.3.3 बेहतर कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था की आवश्यकता (Need of Good Corporate Governance) 125

8.4 कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था के मॉडल (Models of Corporate Governance) 126

8.5 भारत में कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था (Corporate Governance in India) 127

8.5.1 आवश्यकता और महत्त्व (Need and Significance) 127

8.5.2 मार्गदर्शक सिद्धांत (Guiding Principles) 127

8.5.3 विनियामक ढाँचा (Regulatory Framework) 128

8.6 कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (Corporate Social Responsibility CSR) 130

8.6.1 अवधारणा (Concept) 130

8.6.2 परिभाषा (Definition) 130

8.6.3 भारत में CSR (CSR in India) 130

अध्याय 9

शासन की शुचिता (Probity in Governance) 132

9.1 लोक सेवाओं की अवधारणा (Concept of Public Services) 132

9.1.1 परिचय (Introduction) 132

9.2 शासन का दार्शनिक आधार (Philosophical Basis of Governance) 132

परिभाषा (Definition) 132

9.3 शुचिता और भ्रष्टाचार (Probity and Corruption) 133

शुचिता के सिद्धांत (Principles of Probity) 133

9.4 शासन में सूचना साझाकरण और पारदर्शिता (Information Sharing and Transparency in Governance) 135

9.4.1 परिचय (Introduction) 135

9.4.2 परिभाषा (Definition) 135

9.4.3 शासन में पारदर्शिता का महत्त्व (Importance of Transparency in Governance) 135

9.4.4 सूचना का अधिकार (Right to Information) 136

9.4.5 व्हिसलब्लोइंग (Whistleblowing) 139

9.5 प्रशासनिक नीतिशास्त्र (Administrative Ethics) 140

9.5.1 परिचय (Introduction) 140

9.5.2 प्रशासन में नीतिशास्त्र की आवश्यकता (Need for Ethics in Administration) 141

9.6 नागरिक घोषणा-पत्र/अधिकार-पत्र (Citizen's Charter) 143

9.6.1 परिचय (Introduction) 143

9.6.2 नागरिक घोषणा-पत्र का औचित्य (Rationale of Citizen's Charter) 144

9.6.3 नागरिक घोषणा-पत्र/अधिकार-पत्र के घटक (Components of Citizen's Charter) 144

9.6.4 सरकार से नागरिकों की अपेक्षाएँ (Expectations of Citizens from Government) 144

9.6.5 केस स्टडी: जन सेवा केंद्र, अहमदाबाद (Case Study: Jan Sewa Kendra, Ahmedabad) 144

9.6.6 कार्यान्वयन में समस्याएँ (Issues in Implementation) 145

9.7 कार्य संस्कृति (Work Culture)................................146

9.7.1 परिचय (Introduction)............................146

9.7.2 कार्य संस्कृति के प्रकार (Types of Work Culture)......................147

9.7.3 विशेषता (Attributes)..............................147

9.7.4 सुधार का मार्ग (Ways to Improve)..........148

9.8 लोक निधियों का उपयोग (Utilization of Public Funds)..............................148

9.8.1 अर्थ (Meaning) 148

9.8.2 सार्वजनिक निधि के उपयोग के क्षेत्र (Areas of Utilization of Public Funds) . 149

9.8.3 लोक निधि के नैतिक उपयोग की आवश्यकता (Need for Ethical Utilization of Public Funds)................149

9.8.4 लोक निधियों के अनैतिक उपयोग के कारण (Reasons for Unethical use of Public Funds) 149

9.8.5 सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (Public Finance Management System: PFMS)..................................150

9.9 सेवा वितरण की गुणवत्ता (Quality of Service Delivery)............................150

9.9.1 परिचय (Introduction)............................150

9.9.2 महत्त्व (Importance)..............................150

9.9.3 भारत का अनुभव (Indian Experience)....151

9.9.4 भारत में सेवा वितरण की निम्न गुणवत्ता के कारण (Causes of Low Quality of Service Delivery in India)....................152

9.9.5 सेवा वितरण में सुधार हेतु उपाय (Ways to Improve Service Delivery) ...152

9.9.6 सेवोत्तम मॉडल (Sevottam Model)...........153

9.10 भ्रष्टाचार (Corruption)..155

9.10.1 परिभाषा (Definition) 155

9.10.2 विभिन्न रूप (Various Forms).................155

9.10.3 वर्गीकरण (Classification) 155

9.10.4 भ्रष्टाचार के तरीके (Modes of Corruption) 156

9.10.5 भारत में भ्रष्टाचार की प्रकृति और स्थिति (Nature and Status of Corruption in India) 156

9.10.6 एक विकृत व्यवहार के रूप में भ्रष्टाचार (Corruption as a Deviant Behavior) 156

9.10.7 समाज में नैतिक पतन के संकेत के रूप में भ्रष्टाचार (Corruption as a Sign of Moral Decline in Society)....................156

9.10.8 भ्रष्टाचार के परिणाम (Consequences of Corruption)...........156

9.10.9 भ्रष्टाचार से निपटने की रणनीतियाँ (Strategies to Tackle Corruption)........158

विगत् वर्षों के प्रश्न (2013 से 2017) 160

केस स्टडीज़: अभ्यास प्रश्न..196

सिविल सेवा परीक्षा (CSE) **मुख्य परीक्षा: पिछले वर्ष के प्रश्न**..204

अध्याय

1

नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध
(Ethics and Human Interface)

1.1 नीतिशास्त्र का परिचय (Introduction to Ethics)

अर्थ (Meaning)

'समाज के लगभग हर क्षेत्र में, नैतिकता से अधिक महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं है'।

-हेनरी पॉलसन

नीतिशास्त्र (Ethics), दर्शनशास्त्र की अन्य शाखाओं की तरह, स्पष्ट रूप से सरल प्रश्नों से उत्पन्न होता है, जैसे- ईमानदार कार्य सही और बेईमान कार्य गलत क्यों होते हैं? क्या मैं बस में मिला पर्स अपने पास रखूँ या उसके मालिक को वापस लौटा दूँ? ये ऐसे प्रश्न हैं, जो स्वाभाविक रूप से हमारे जीवन के दौरान घटित होते हैं, जैसे वे सामान्यत: उन लोगों के जीवन में घटित होते हैं, जो हमसे पहले और हमसे भिन्न संस्कृतियों व प्रौद्योगिकियों वाले समाजों में रहते थे। वे सरल प्रतीत होते हैं, लेकिन अंतत: भ्रमित करने वाले होते हैं। नीतिशास्त्र मूल रूप से ऐसे प्रश्नों का चिंतनशील अध्ययन (Reflective Study) है तथा यह पता लगाता है कि कौन-से कार्य अच्छे या बुरे हैं।

व्युत्पत्ति के अनुसार "एथिक्स" (Ethics) शब्द ग्रीक शब्द "एथोस" (Ethos) से मेल खाता है, जिसका अर्थ चरित्र (Character), आदत (Habit), प्रथा (Customs), व्यवहार के तरीके आदि होता है। नीतिशास्त्र को "नैतिक दर्शन" (Moral Philosophy) भी कहा जाता है। शब्द 'नैतिक (Moral)' लैटिन शब्द 'मूर्स (Mores)' से आया है, जो रीति-रिवाज़, चरित्र, व्यवहार आदि को दर्शाता है। सरल शब्दों में, 'नीतिशास्त्र' का अर्थ है कि क्या अच्छा है और इसे प्राप्त करने का तरीका क्या है, और क्या बुरा है तथा इससे कैसे बचा जाए। इसका तात्पर्य यह है कि जो अच्छा है, उसे प्राप्त करने के लिए क्या किया जाना चाहिए एवं जो बुरा है, उससे बचने के लिए क्या नहीं किया जाना चाहिए।

एक दार्शनिक शाखा (Discipline) के रूप में, 'नीतिशास्त्र' उन मूल्यों (Values) और दिशा-निर्देशों का अध्ययन है, जिनके द्वारा हम जीवन जीते हैं। इसमें इन मूल्यों और दिशा-निर्देशों का औचित्य भी शामिल होता है। यह केवल किसी परंपरा (Tradition) या प्रथा (Custom) का पालन करना नहीं है। इसके बजाय, सार्वभौमिक सिद्धांतों के आलोक में इन दिशा-निर्देशों के विश्लेषण और मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। नैतिक दर्शन के रूप में, नीतिशास्त्र 'नैतिकता' (Morality), नैतिक समस्याओं (Moral Problems) और नैतिक निर्णयों के बारे में दार्शनिक विचार है। नीतिशास्त्र भी एक विज्ञान है, क्योंकि इसके सिद्धांत मानवीय कारणों से उत्पन्न होते हैं। 'नीतिशास्त्र' सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों होते हैं। यह सैद्धांतिक है, क्योंकि यह मौलिक सिद्धांत प्रदान करता है, जिसके आधार पर नैतिक निर्णय (Moral Judgements) लिए जाते हैं। यह उतना ही व्यावहारिक है, क्योंकि यह प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य और उसे प्राप्त करने के साधनों से संबंधित है।

अत: नीतिशास्त्र को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:

- परम आनंद (Happiness) की प्राप्ति के साधन के रूप में मानवीय कार्यों का उनकी सही या गलत होने की दृष्टि से व्यवस्थित अध्ययन।
- नीतिशास्त्र मानकों का एक समूह है, जिसे समाज स्वयं पर लागू करता है और जो व्यवहार, विकल्पों और कार्यों को निर्देशित करने में मदद करता है - द्वितीय ARC रिपोर्ट।
- यह मानव आचरण के उस हिस्से का चिंतनशील अध्ययन है, जिसमें क्या अच्छा या बुरा है, इस संबंध में प्रश्न किया जाता है, तथा जिस आचरण के लिए मानव की कुछ व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी होती है।
- यह स्वीकृत मान्यताओं की एक प्रणाली है, जो व्यवहार, विशेष रूप से 'नैतिकता' (Morals) पर आधारित ऐसी प्रणाली को नियंत्रित करती है- कैम्ब्रिज डिक्शनरी।

1.1.1 नीतिशास्त्र का विकास (Evolution of Ethics)

नीतिशास्त्र उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी 'मानवता' है। यह स्पष्ट है कि पहले के नीतिशास्त्रीय सिद्धांत (Ethical Principles) माता-पिता और बड़ों द्वारा मौखिक रूप से निर्मित किए गए थे। जैसे-जैसे समाज ने लिखित शब्द का उपयोग करना सीखा, उन्होंने अपनी नीतिशास्त्रीय मान्यताओं (Ethical Beliefs) को दर्ज करना शुरू कर दिया। ये अभिलेख नीतिशास्त्र की उत्पत्ति का पहला ऐतिहासिक साक्ष्य हैं।

A. पश्चिमी दर्शन में नीतिशास्त्र का विकास (Evolution of Ethics in Western Philosophy)

(i) प्राचीन काल (Ancient Period)

पश्चिमी दर्शन में, नीतिशास्त्र का इतिहास सुकरात के आगमन के साथ पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में आरंभ होता है। यूनानियों

के बीच एक दार्शनिक के रूप में, उनका मिशन अपने साथी मनुष्यों को उनकी मान्यताओं (Beliefs) और प्रथाओं (Practices) की तर्कसंगत आलोचना की आवश्यकता के प्रति जागृत करना था। प्लेटो के आकार या प्रत्यय सिद्धांत (Plato's Theory of Forms) को नैतिक यथार्थवाद (Moral Realism) की रक्षा करने और नैतिक सत्य (Moral Truths) के लिए एक वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करने के पहले प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। प्लेटो ने प्रकृति, ईश्वर और मानव के बारे में एक व्यवस्थित दृष्टिकोण का निर्माण किया, जिससे व्यक्ति को अपने नीतिशास्त्रीय सिद्धांत प्राप्त हुए। अपने नीतिशास्त्रीय दर्शन में उनका मुख्य लक्ष्य 'शुभ के दृष्टिकोण' (Vision of the Good) का मार्ग प्रशस्त करना था। अरस्तू का नैतिक लेखन नीतिशास्त्र की नींव के पहले व्यवस्थित परीक्षण का निर्माण करता है। अरस्तू के सद्गुणों (Virtues) के विवरण को नैतिक मानकों (Moral Standards) पर पहुँचने वाले पहले निरंतर अन्वेषणों में से एक के रूप में देखा जा सकता है, जो सही और गलत आचरण को नियंत्रित करते हैं।

(ii) मध्यकाल (Medieval Period)

मध्यकाल में, ऑगस्टीन और थॉमस एक्विनास (Augustine and Thomas Aquinas) जैसे ईसाई दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों (Theologians) के विचारों का वर्चस्व था। ईसाई धर्म का प्रभाव नीतिशास्त्रीय परिदृश्य पर हावी था। सेंट ऑगस्टीन का नीतिशास्त्र, सांसारिक कल्याण की खोज और आत्मा को शाश्वत मोक्ष के लिए तैयार करने का मिश्रण बन गया।

थॉमस एक्विनास ने ऑगस्टीन के धर्मशास्त्र (Theology) के साथ अरस्तू के विज्ञान और दर्शन के बीच एक सटीक सामंजस्य स्थापित किया। अरस्तू और एक्विनास दोनों के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य खुशी चाहता है, और सभी मनुष्य आनंदित रहने के लिए ही कुछ करते हैं। चूँकि दोनों आनंद को मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य और मानव स्वभाव की पूर्ति के रूप में देखते हैं, अत: वे नीतिशास्त्र को इस अध्ययन के रूप में देखते हैं कि मनुष्य कैसे अपने स्वभाव के अनुसार जीवन जी सकता है और खुशी प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार, नीतिशास्त्र का व्यावहारिक और सैद्धांतिक लक्ष्य भी होता है।

(iii) आधुनिक काल (Modern Period)

मध्यकाल के अंत और औद्योगिक लोकतंत्र के आधुनिक युग के उदय से संबद्ध सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों ने नीतिशास्त्र के क्षेत्र में चिंतन की एक नई लहर पैदा की। कुछ आधुनिक दार्शनिक, जैसे- थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक, डेविड ह्यूम, इमैनुएल कांट, जेरेमी बेंथम और जॉन स्टुअर्ट मिल थे, जिन्होंने नीतिशास्त्रीय चिंतन में महान बदलाव में योगदान दिया। पश्चिम में नीतिशास्त्रीय चिंतन में और अधिक विकास कार्ल मार्क्स और सिगमंड फ्रायड के साथ हुआ।

(iv) समकालीन अवधि (Contemporary Period)

समकालीन सभ्यता की परिस्थितियों ने दार्शनिकों को नीतिशास्त्र और नैतिक जीवन के लिए वास्तविक आधार खोजने के लिए मजबूर किया। अधिकांश अंग्रेज़ी भाषी दुनिया में जी.ई. मूर की 'प्रिंसिपिया एथिका' (Principia Ethica, 1903) को समकालीन नीतिशास्त्रीय सिद्धांत का आरंभिक बिंदु माना जाता है। मार्टिन बुबर (Martin Buber), गैब्रियल मार्सेल, इमैनुएल लेविनास, मैक्स शिलर (Mañ Scheler), फ्रेंज ब्रेंटानो और जॉन ड्युई जैसे अन्य लोगों ने भी दुनिया के अन्य हिस्सों में नीतिशास्त्रीय चिंतन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

B. भारतीय दर्शन में नीतिशास्त्र का विकास (Evolution of Ethics in Indian Philosophy)

(i) प्राचीन काल (Ancient Period)

भारतीय नीतिशास्त्र की शुरुआत वेदों, विशेषकर ऋग्वेद से मानी जाती है। ऋग्वेद की केंद्रीय नीतिशास्त्रीय अवधारणाओं में से एक 'ऋत् (Rit)' है, जो सभी चीज़ों में व्याप्त एकीकृत व्यवस्था या नैतिक कानून (Moral Law) की अवधारणा है। 'ऋत्' की अवधारणा ने दो अन्य महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं, जैसे- धर्म की अवधारणा और कर्म की अवधारणा को जन्म दिया है। वैदिक नीतिशास्त्र में अधिक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक तत्त्व देवताओं को पूर्ण समर्पण के साथ अर्पित किया जाने वाला प्रेम और पूजा-अर्चना है।

उपनिषदीय नीतिशास्त्र मुख्यत: आत्मा-केंद्रित (Atman-centric) और बौद्धिकतावादी (Intellectualistic) है। उपनिषद् घोषणा करते हैं कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए वैदिक यज्ञ पूर्णत: अप्रासंगिक हैं और इसलिए, मनुष्य को लगातार अपनी स्वयं के मोक्ष की तलाश करने और अन्य सामाजिक, नैतिक दायित्वों की चिंता न करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

मनु और अन्य धर्मशास्त्र की संस्थाएँ हिंदू कर्मकांड और सामाजिक नीतिशास्त्र दोनों के मुख्य स्रोत ग्रंथ हैं। उपनिषदों ने व्यक्ति की मुक्ति पर बल दिया, लेकिन मनुस्मृति ने व्यक्तित्व को सामाजिक संरचनाओं के अधीन कर दिया। मनुष्य के कर्त्तव्य समय (युग) और स्थान (देश) के सापेक्ष माने गए हैं। किसी व्यक्ति के कर्त्तव्य भी उसके वर्ण (वर्ग) और जीवन की अवस्था (आश्रम) के सापेक्ष होते हैं। मनु ने कुछ सद्गुणों (Virtues) को सार्वभौमिक बताया है।

भगवद्गीता सर्वोच्च आनंद की प्राप्ति के लिए 'कर्म योग' और 'ज्ञान योग' दोनों पर बल देती है। कर्म की अवधारणा यह दर्शाती है कि नैतिक कानून एकसमान होते हैं, जो मनुष्य के कार्यों को नियंत्रित करते हैं तथा उनके कार्यों के अनुसार पुरस्कार और दंड निर्धारित होता है। ज्ञान योग एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जो 'मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ' जैसे प्रश्नों के माध्यम से ज्ञान की खोज करता है।

भगवान बुद्ध सार्वभौमिक प्रेम (Universal Love) की बात करते हैं, जिसके माध्यम से वे सभी प्राणियों के प्रति असीम हृदय, अर्थात् सभी के प्रति प्रेम विकसित करने की बात कहते हैं। बुद्ध ने हमें सुखी और शांतिपूर्ण जीवन पाने के साथ-साथ ज्ञान तथा समझ विकसित करने के लिए दस पुण्य कर्मों (Ten Meritorious Deeds) या पारमिताएँ करने के लिए कहा। बौद्ध धर्म आम बौद्धों को स्वेच्छा से पाँच आचार (Five Precepts) अपनाने के लिए कहता है। बौद्ध नैतिकता किसी कार्य को उसके उद्देश्य या प्रेरणा के आधार पर अच्छा या बुरा मानती है।

जैन धर्म वैदिक अनुष्ठानवाद (Ceremonialism) और बलिवाद (Sacrificialism) को भी अस्वीकार करता है और यह अहिंसा को सबसे महत्त्वपूर्ण नैतिक गुण मानता है। फलत: यह वैदिक यज्ञों की निंदा करता है। पंचमहाव्रत और त्रिरत्न जैन परंपरा के नीतिशास्त्र का निर्माण करते हैं।

(ii) मध्यकाल (Medieval Period)

इस काल में नीतिशास्त्रीय चिंतन काफ़ी हद तक भक्ति और सूफ़ी आंदोलन से प्रभावित था। भक्ति आंदोलन के प्रमुख सुधारक रामानंद, कबीर, रविदास, तुलसीदास, तुकाराम आदि थे। दोनों आंदोलन सभी साथी मनुष्यों के प्रति करुणा में विश्वास करते थे। उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता की वकालत की। उन्होंने जातिवाद और सती जैसी रूढ़िवादी सामाजिक परंपराओं की निंदा की।

(iii) आधुनिक काल (Modern Period)

समकालीन भारतीय दर्शन में मूल्यों (Values) और नीतिशास्त्रीय प्रवृत्ति को राजा राम मोहन रॉय, एम.के. गाँधी, विवेकानंद, अरबिंदो घोष, रवींद्रनाथ टैगोर और राधाकृष्णन के दर्शन में देखा जा सकता है। उनके नैतिक विचारों ने भारतीय समाज सुधार आंदोलन के साथ-साथ स्वतंत्रता आंदोलन को भी प्रभावित किया।

(iv) समकालीन अवधि (Contemporary Period)

समकालीन दौर को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख विचारक दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आदि हैं। दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' (Integral Humanism) का दर्शन एक ऐसा विकास मॉडल प्रस्तुत करता है, जिसका मुख्य केंद्र बिंदु 'मानव' है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कार्य नीतिशास्त्र (Work Ethics) को प्रेरित किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन से वर्तमान भारतीय पीढ़ियों पर पुराने और नए, विदेशी तथा भारतीय नैतिक चिंतनों की विविधता का प्रभाव देखा जा सकता है।

> उपरोक्त कुछ नैतिक विचारकों और चिंतन पर अगले अध्यायों में चर्चा की जाएगी।

1.1.2 नीतिशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता (Need to Study Ethics)

- **जीवन के प्रश्नों पर चिंतन** (Reflection on the Questions of Life): नैतिक दर्शन या नीतिशास्त्र का अध्ययन जीवन के मौलिक प्रश्नों पर हमारे चिंतन को गहरा कर सकता है। नीतिशास्त्र का अध्ययन व्यक्ति को अपने जीवन को आलोचनात्मक रूप से देखने और अपने कार्यों/विकल्पों/निर्णयों का मूल्यांकन करने में मदद करता है।
- **नीतिशास्त्र की बेहतर समझ** (Better Understanding of Morality): शिक्षा के प्रसार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति, आसान संचार माध्यम, यात्रा के तीव्र साधन आदि के द्वारा एक संस्कृति के लोग दूसरी संस्कृति के लोगों के साथ अधिक निकट संपर्क में आते हैं, जिससे पारंपरिक नैतिक मूल्य (जैसे 'न्यायपूर्ण' युद्ध, विवाह की अविच्छेदता (Indissolubility of Marriage) के साथ-साथ एक अपरिवर्तनीय और सार्वभौमिक रूप से मान्य नैतिकता की 'सार्थकता' पर भी सवाल उठाया जाता है। नैतिक दर्शन का अध्ययन हमें नैतिकता के बारे में बेहतर ढंग से सोचने में मदद कर सकता है। जब हम निर्णय लेते हैं, तो यह हमारी नैतिक स्थिति को स्पष्ट करने में हमारी मदद कर सकता है। यह हमारे सामने आने वाले विशिष्ट नैतिक मुद्दों [जैसे- गर्भपात और इच्छामृत्यु (Euthanasia)] के बारे में हमारे चिंतन को भी बेहतर बना सकता है।
- **हमारी सामान्य चिंतन प्रक्रियाओं को गहरा करना** (Sharpen our General Thinking Processes): नैतिक दर्शन (Moral Philosophy) का अध्ययन हमें अपनी सामान्य चिंतन प्रक्रियाओं को तेज़ करने में मदद कर सकता है। यह हमारे मस्तिष्क को तार्किक और तर्कसंगत रूप से सोचने व नैतिक मुद्दों को अधिक स्पष्टता के साथ सँभालने के लिए प्रशिक्षित करता है।
- **असहमति को इंगित करना** (Pinpoint a Disagreement): नीतिशास्त्र के ढाँचे का उपयोग करते हुए, दो लोग, जो किसी नैतिक मुद्दे पर बहस कर रहे हों, अकसर यह पा सकते हैं कि जिस बात पर वे असहमत हैं, वह मुद्दे का सिर्फ एक विशेष हिस्सा है, और वे व्यापक तौर पर बाकी सभी चीज़ों पर सहमत होते हैं। इससे बहस को विवाद में परिवर्तित होने से रोका जा सकता है, और कभी-कभी उन्हें अपनी समस्या का समाधान करने का रास्ता भी मिल सकता है।
- **नैतिक संस्थाओं और नागरिकों के लिए** (For Ethical Institutions and Citizens): प्रत्येक पेशे, स्वैच्छिक संगठन और नागरिक समाज संरचना में नीतिशास्त्र की आवश्यकता है, क्योंकि ये संस्थाएँ अब शासन की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण रूप से शामिल हैं। अंतत:, नागरिक व्यवहार में नीतिशास्त्र होना चाहिए, क्योंकि ऐसा व्यवहार सीधे सरकार

और प्रशासन में नैतिकता को प्रभावित करता है। यह मत द्वितीय ARC रिपोर्ट में व्यक्त किया गया है।

1.1.3 नीतिशास्त्र में विभिन्नता (Differentiating Ethics)

अधिकांश विज्ञान हमारे अनुभव की कुछ एकरूपताओं (Uniformities) से संबंधित हैं – जिस तरह से वस्तुओं के कुछ वर्ग (जैसे- चट्टानें या पौधे) अस्तित्व में पाए जाते हैं, या जिस तरह से घटनाओं के कुछ वर्ग (जैसे- ध्वनि या बिजली की घटनाएँ) होते हैं। इन विज्ञानों का किसी भी लक्ष्य, जिसे प्राप्त किया जाना है, का कोई सीधा संदर्भ नहीं है, या किसी आदर्श, जिसके संदर्भ में तथ्यों का मूल्यांकन किया जाता है, का कोई सीधा संदर्भ नहीं है। हालाँकि, एक विज्ञान के रूप में नीतिशास्त्र का संबंध किसी लक्ष्य या आदर्श या मानक से है।

यद्यपि नीतिशास्त्र को कभी-कभी एक व्यावहारिक विज्ञान (Practical Science) माना जाता है, यह चिकित्सा, इंजीनियरिंग या वास्तुकला के रूप में एक 'व्यावहारिक विज्ञान' नहीं है, क्योंकि यह एक निश्चित परिणाम (जैसे- एक निश्चित परिणाम, जो एक वास्तुकार अच्छी संरचना का निर्माण कर प्राप्त करना चाहता है) की प्राप्ति के लिए निर्देशित नहीं होते हैं। नैतिकता को अकसर 'सभी विज्ञानों का फल' (Fruit of All the Sciences) कहा जाता है, क्योंकि यह अंततः मानव को, अन्य सभी विज्ञानों और अन्य सभी चीज़ों को एक अंतिम लक्ष्य (पूर्णतः सर्वोच्च) के संबंध में व्यवस्थित कर पूर्ण बनाता है।

अन्य विज्ञान (Other Sciences)		**नीतिशास्त्र** (Ethics)
मनोविज्ञान (Psychology)	एक मानव कैसा व्यवहार करता है।	मानव को कैसा व्यवहार करना चाहिए।
नृ-विज्ञान (Anthropology)	मानव तथा उसके क्रियाकलापों की प्रकृति।	मनुष्य के कृत्य कैसे होने चाहिए।
सामाजिक और राजनीतिक विज्ञान (Social and Political Sciences)	मानव का सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन।	मनुष्य का सामाजिक और राजनीतिक जीवन नैतिक होने के लिए कैसे संगठित होना चाहिए।
अर्थशास्त्र (Economics)	वस्तुओं से संबंधित, अर्थात् उन वस्तुओं से, जो किसी भी मानवीय आवश्यकता को पूरा करने का साधन हैं।	उन कार्यों से संबंधित है, जो जीवन के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति की शर्तें हैं।

A. नीतिशास्त्र और धर्म (Ethics and Religion)

नीतिशास्त्र का किसी विशेष धर्म से कोई संबंध नहीं है। 'धर्म' विश्वासों, सांस्कृतिक प्रणालियों और विश्व दृष्टिकोणों का एक संगठित संग्रह (Organized Collection) है, जो मानवता को अस्तित्व के क्रम (Order of Eñistence) से जोड़ता है। अकसर, धर्म और नीतिशास्त्र को एक ही चीज़ के रूप में माना जाता है। विभिन्न धर्म यह दावा करते हैं कि उनकी विश्वास प्रणाली लोगों के लिए जीने का सबसे अच्छा तरीका है। सामान्यतः सभी धार्मिक परंपराओं का मानना है कि उनका विश्वास आत्मज्ञान/प्रबोधन (Enlightenment) और मोक्ष/निर्वाण (Salvation) के मार्ग का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरी ओर, नीतिशास्त्र सार्वभौमिक निर्णय लेने वाले उपकरण हैं, जिसका उपयोग नास्तिकों (Atheists) सहित किसी भी धार्मिक विचारधारा वाले व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए: किसी धर्म विशेष द्वारा नास्तिकों पर सदाचार के मानदंड लागू नहीं हो सकते हैं, लेकिन फिर भी, उनके व्यवहार में कुछ नैतिकताओं का अनुपालन करने की अपेक्षा की जा सकती है।

'धर्म' ब्रह्मांड विज्ञान (Cosmology), परंपरा और मान्यताओं के बारे में दावे करता है, जबकि 'नीतिशास्त्र' परंपरा या निषेधाज्ञा (Injunction) के बजाय तर्क और कारण पर आधारित होती है।

धर्म की कई प्रथाएँ नीतिशास्त्रीय होती हैं, लेकिन कुछ धार्मिक प्रथाओं को नीतिशास्त्रीय नहीं माना जा सकता है। नीतिशास्त्र धार्मिक प्रथाओं पर भी सवाल उठा सकता है।

उदाहरण के लिए:

1. सती प्रथा धार्मिक थी, लेकिन अनैतिक मानी जाती थी।
2. धार्मिक परंपरा के तहत कुछ मंदिरों के गर्भगृह में महिलाओं को प्रवेश की अनुमति नहीं है, लेकिन इसे अनैतिक (Unethical) माना जा सकता है।

वास्तव में, प्रत्येक धर्म का मूल कुछ सार्वभौमिक नैतिकताओं (जैसे- प्रेम, करुणा, सत्य आदि) पर केंद्रित होता है। लेकिन वह परिधि, जिसमें कुछ अनुष्ठान, रीति-रिवाज़ और परंपराएँ शामिल होते हैं, अनैतिक हो सकती हैं।

B. नीतिशास्त्र तथा विधि/कानून (Ethics and Law)

कानून सरकार जैसे उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा बनाए गए नियमों और विनियमों का व्यवस्थित समुच्चय होता है, जो क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय आदि हो सकता है। इसका उपयोग सदस्यों के कार्य और व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है तथा इसे दंड लगाकर लागू किया जा सकता है। नीतिशास्त्र वे सिद्धांत हैं, जो किसी व्यक्ति या समाज का मार्गदर्शन करते हैं। ये यह तय करने के लिए बनाए गए हैं कि किसी भी स्थिति में अच्छा या बुरा,

सही या गलत क्या है। यह किसी व्यक्ति के व्यवहार या आचरण को नियंत्रित करता है और नैतिक नियमों व दिशा-निर्देशों को लागू करके एक व्यक्ति को अच्छा जीवन जीने में मदद करता है।

कई कानून नैतिक होते हैं, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि कुछ कानूनों को नैतिक नहीं माना जा सकता है, अर्थात् जो कानूनी है, वह हमेशा नैतिक नहीं होता है। ऐसा कहा जाता है कि कानून व्यवहार के न्यूनतम मानक निर्धारित करता है, जबकि नीतिशास्त्र अधिकतम मानक निर्धारित करती है।

उदाहरण के लिए:

1. कई देशों में नैदानिक परीक्षण (Clinical Trials) विधिक् होते हैं, लेकिन उन्हें नैतिक नहीं माना जा सकता है।
2. कुछ देशों में विवाह के बाद बिना सहमति के यौन संबंध वैध माने जाते हैं, लेकिन इसे अनैतिक माना जा सकता है।
3. ब्रिटिश काल में 'देशी समाचार-पत्र अधिनियम, 1878 (Vernacular Press Act, 1878), राजद्रोह अधिनियम (Sedition Act) आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कुचलना विधिक् तो था, लेकिन नैतिक नहीं था।
4. रंगभेद (Apartheid) कानूनी था, लेकिन अनैतिक था।
5. मॉन्टगोमरी, अलबामा में बसों में नस्लीय रूप से अलग-अलग सीटें वैध थीं, लेकिन नैतिक नहीं थीं।

विधि (Law)	**नीतिशास्त्र** (Ethics)
यह एक ऐसी प्रणाली है, जो सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए नियमों और दिशा-निर्देशों को लागू करती है।	यह नैतिक दर्शन की एक शाखा है, जो लोगों का बुनियादी मानवीय आचरण के बारे में मार्गदर्शन करती है।
ये सरकार जैसे कुछ प्राधिकरण द्वारा शासित होते हैं।	स्वयं व्यक्तियों द्वारा शासित होता है।
इन्हें लिखित रूप में व्यक्त और प्रकाशित किया जाता है।	इन्हें प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं होती है।
ये बाध्यकारी होते हैं, जिनका उल्लंघन स्वीकार्य नहीं है और इसके परिणामस्वरूप कारावास या जुर्माना या दोनों जैसी सज़ाएँ हो सकती हैं।	ये बाध्यकारी नहीं होते हैं। नीतिशास्त्र के उल्लंघन पर कोई सज़ा नहीं होती है।
ये सीधे तौर पर बताते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है।	नीतिशास्त्र लोगों को यह तय करने में मदद करता है कि क्या सही है और क्या गलत है।

C. नीतिशास्त्र और नैतिकता (Ethics and Morals)

कई बार नीतिशास्त्र और नैतिकता को एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है, लेकिन नीतिशास्त्र और नैतिकता के बीच मामूली और सूक्ष्म अंतर होते हैं।

'नैतिकता' व्यक्ति या समूह की वह मान्यता है कि क्या सही है और क्या गलत। नैतिकता किसी व्यक्ति या समूह की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएँ या मूल्य हैं, जो हमें बताते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है। उदाहरण के लिए- निष्ठावान रहना, अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करना, अतिथि को भगवान के समान मानना (अतिथि देवो भव:) आदि।

'नीतिशास्त्र' मार्गदर्शक सिद्धांत होते हैं, जो व्यक्ति या समूह को यह निर्णय लेने में मदद करते हैं कि क्या अच्छा है या क्या बुरा है। नीतिशास्त्र उन तर्कों, मूल्यों और सिद्धांतों का परीक्षण और विश्लेषण करता है, जिनका उपयोग नैतिकता को उचित ठहराने के लिए किया जाता है। नीतिशास्त्र मूलत: नैतिकता का अध्ययन करता है। यह ईमानदारी (Honesty), करुणा (Compassion), सामाजिक हित जैसे सिद्धांतों का अर्थ खोजने का प्रयास करता है; किसी विशेष परिस्थिति में आचरण पर उनका क्या प्रभाव हो सकता है; कोई एक सिद्धांत को दूसरे सिद्धांत से अधिक प्राथमिकता कैसे दे सकता है। संक्षेप में, "नैतिकता विषय-वस्तु है, और नीतिशास्त्र उस विषय-वस्तु का अध्ययन है", जैसे सामाजिक मुद्दे विषय-वस्तु हैं और समाजशास्त्र इसका अध्ययन है।

नैतिकता (Morals)	**नीतिशास्त्र** (Ethics)
नैतिकता व्यक्ति या समूह की वह मान्यता है कि क्या सही है और क्या गलत है।	नीतिशास्त्र मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति या समूह को यह निर्णय लेने में मदद करते हैं कि क्या अच्छा है या बुरा है।
नैतिकता सामान्य नियमों और कथनों के रूप में व्यक्त की जाती है।	नीतिशास्त्र अमूर्त होते हैं।

1.1.4 सही और गलत के स्रोत (Sources of Right and Wrong)

हम पहले से ही जानते हैं कि नीतिशास्त्र हमें सही या गलत का निर्धारण करने में मदद करता है। हालाँकि, ऐसे कई कारक हैं, जो नैतिक या अनैतिक, अर्थात् सही या गलत के बारे में हमारी धारणा को निर्धारित करते हैं। नीतिशास्त्र के कुछ महत्त्वपूर्ण निर्धारक तत्त्व निम्नलिखित हैं:

परिवार (Family): परिवार हमारे लिए सही-गलत के निर्धारण का पहला स्रोत होता है। ईमानदारी, प्रेम, सहयोग, देखभाल जैसे कुछ मूल्य बच्चों में अपने आप विकसित हो जाते हैं। परिवार द्वारा अपनाए जाने वाले कई रीति-रिवाज़, परंपराएँ हमारे नैतिक चिंतन को आकार देती हैं।

विद्यालय (School): परिवार के बाद विद्यालय का बच्चों पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चा विद्यालय में सहिष्णुता, भाईचारा, टीम भावना आदि मूल्य सीखता है।

शिक्षा (Education): हमें साक्षरता (Literacy) और शिक्षा (Education) के बीच अंतर करना चाहिए। हालाँकि एक शिक्षित व्यक्ति साक्षर हो सकता है, लेकिन हर साक्षर व्यक्ति को शिक्षित नहीं कहा जा सकता। शिक्षा एक व्यापक अवधारणा है, जो मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखती है। व्यक्ति को

जिस प्रकार की शिक्षा मिलती है, उसका प्रभाव उसके नैतिक चिंतन पर भी पड़ता है। स्कूलों में दिए गए मूल्य और शिक्षा किसी व्यक्ति के नैतिक व्यवहार को आकार दे सकते हैं।

मित्र और सहकर्मी (Friends and Peers): हमारे मित्रों और साथियों के मूल्य हमसे भिन्न हो सकते हैं। इससे एक-दूसरे की सोच पर परस्पर प्रभाव पड़ सकता है। हम अपने साथियों से टीम भावना, देखभाल, प्रतिस्पर्धात्मकता जैसे मूल्य सीखते हैं।

संगठन (Organisation): हमारे मूल्य और नैतिकता भी संगठनात्मक मूल्यों और कार्य संस्कृति से आकार लेते हैं।

धर्म (Religion): हर धर्म के अपने नैतिक मूल्य होते हैं, जो हमारे नैतिक चिंतन को आकार दे सकते हैं। हम कई कार्य इसलिए करने से बचते हैं, क्योंकि हमारा धर्म हमें ऐसा करने से मना करता है। धर्म द्वारा निर्धारित नैतिक मूल्यों को दैवीय आदेश (Divine Mandate) माना जाता है और इसीलिए, इसका हमारे नैतिक चिंतन पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक नियम और रीति-रिवाज़ (Social Rules and Customs): सामाजिक नियम एवं रीति-रिवाज़ स्थान एवं समय के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। अधिकांश लोग उनका अनुसरण करते हैं और इस प्रकार, वे हमारे नैतिक विचारों और व्यवहार को आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, पर्दा प्रथा कुछ समाजों में स्वीकार्य है, जबकि अन्य में इसकी निंदा की जाती है। इसी प्रकार, समय के साथ भारतीय समाज में पर्दा प्रथा की स्वीकार्यता कम हो गई है।

राजनीति (Politics): देश में मौजूद राजनीतिक दर्शन/व्यवस्था हमारे नैतिक चिंतन पर प्रभाव डाल सकती है। एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में मुख्य रूप से धार्मिक नैतिकता का पालन किया जाता है और व्यक्तियों द्वारा पालन की जाने वाली नैतिकता के लिए कम स्वतंत्रता हो सकती है, जबकि लोकतंत्र विभिन्न नैतिक विचारों के लिए स्वीकृति दर्शाता है। इसी प्रकार, साम्यवाद, पूँजीवाद जैसे राजनीतिक दर्शन उन देशों में लोगों द्वारा पालन की जाने वाली नैतिकता पर प्रभाव डाल सकते हैं।

कानून या विधि (Laws): कुछ कानून नैतिक होते हैं, जबकि कुछ नैतिक नहीं होते हैं, फिर भी, सामान्यत: व्यक्ति उनका पालन करते हैं। इसलिए, कानून का पालन करने वाले नागरिक अनैतिक कानूनों का पालन कर सकते हैं और इस प्रकार, यह अनैतिक आचरण को जन्म दे सकता है। जबकि नैतिक कानून नैतिक आचरण की ओर ले जाते हैं।

1.2 नैतिक निर्णयन (Ethical Decision Making)

विकल्पों पर विचार करने और नैतिक मानकों के अनुरूप कार्यवाही का एक तरीका चुनने की प्रक्रिया को 'नैतिक निर्णयन' कहा जाता है। नैतिक निर्णय लेते समय अनैतिक संभावनाओं को पहचानना, उन्हें दूर करना और सबसे नैतिक विकल्प चुनना महत्त्वपूर्ण होता है।

इसमें ऐसी कार्यवाही का मूल्यांकन करना और निर्णय लेना शामिल होता है, जो नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों, जैसे- सत्यनिष्ठा (Integrity), ईमानदारी (Honesty), निष्पक्षता (Fairness) और उत्तरदायित्व (Responsibility) के अनुरूप हो। नैतिक निर्णयन में कार्यों के दीर्घकालिक परिणामों और अल्पकालिक लाभ से अधिक सामाजिक भलाई (Societal Well-being) पर विचार किया जाता है। यह सभी हितधारकों के हितों और कल्याण पर बल देता है और इसमें पारदर्शिता की आवश्यकता होती है।

'नैतिक निर्णयन मॉडल' का उद्देश्य निर्णय-कर्ता (Decision-maker) को उन नैतिक मुद्दों को स्पष्ट करने और हल करने में मदद करना है, जिन्हें आप निर्णय लेने पर विचार करते समय पहचानते हैं।

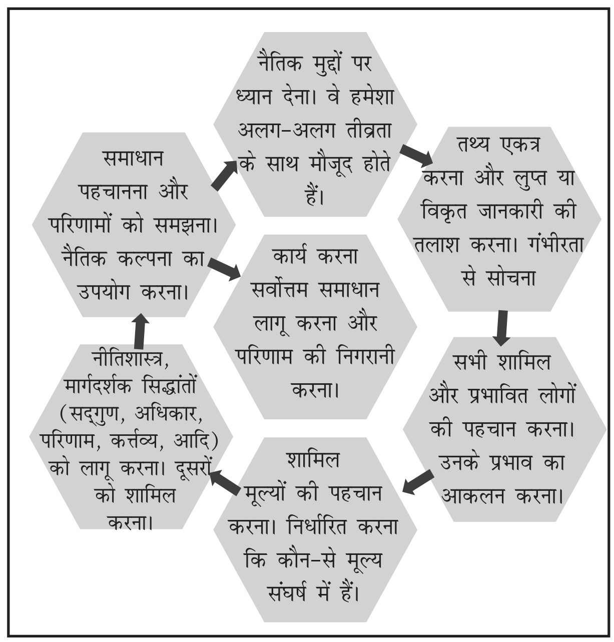

1.3 नीतिशास्त्र के आयाम (Dimensions of Ethics)

नीतिशास्त्र के अध्ययन के लिए मूल रूप से चार अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, जिन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

A. गैर-मानकीय दृष्टिकोण (Non-Normative Approaches): गैर-मानकीय दृष्टिकोण नैतिक रूप से सही या गलत के बारे में निर्णय लेने की चिंता किए बिना नैतिकता का परीक्षण करते हैं। वे नैतिक मुद्दों के संबंध में कोई नैतिक स्थिति नहीं अपनाते हैं।

1. अधि-नीतिशास्त्र (Meta Ethics)
2. वर्णनात्मक नीतिशास्त्र (Descriptive Ethics)

B. मानकीय दृष्टिकोण (Normative Approaches): मानकीय दृष्टिकोण यह निर्णय लेते हैं कि नैतिक रूप से क्या सही है या क्या गलत है। वे नैतिक मुद्दों के संबंध में एक स्पष्ट नैतिक स्थिति अपनाते हैं।

1. सामान्य मानकीय नीतिशास्त्र (General Normative ethics)
2. व्यावहारिक/अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied ethics)

1.4 गैर-मानकीय दृष्टिकोण (Non-Normative Approaches)

1.4.1 अधि-नीतिशास्त्र (Meta Ethics)

'अधिक शब्द का अर्थ बाद (After) या उससे आगे (Beyond) होता है। अधि-नीतिशास्त्र विश्लेषणात्मक दर्शन (Analytic Philosophy) की एक शाखा है, जो नैतिक मूल्यों, गुणों और शब्दों की स्थिति, आधार और दायरे का पता लगाती है। अधि-नीतिशास्त्र नैतिक तर्क और निर्णय लेने में प्रयुक्त केंद्रीय शब्दों के अर्थों के विश्लेषण पर केंद्रित होता है। यह अर्थ के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है। यह अध्ययन करता है कि हमारे नैतिक सिद्धांत कहाँ से आते हैं और उनका क्या अर्थ होता है। यह नैतिक मूल्यों के अंतर्निहित सिद्धांतों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

अधि-नीतिशास्त्रीय स्थितियों को इस आधार पर विभाजित किया जा सकता है कि वे निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर कैसे देती हैं:

(a) नैतिक शब्दों या निर्णयों का क्या अर्थ होता है? अर्थात् जब लोग 'अच्छा' और 'सही' जैसे नैतिक शब्दों का उपयोग करते हैं, तो वे वास्तव में क्या कर रहे होते हैं? इसका समाधान अर्थविज्ञान या शब्दार्थ सिद्धांत (Semantic Theories) द्वारा किया जाता है।

(b) 'नैतिक निर्णयों की प्रकृति क्या है?' अर्थात्, क्या कुछ चीज़ें हर समय सभी लोगों के लिए नैतिक रूप से सही या गलत होती हैं, या इसके बजाय नैतिकता व्यक्ति-दर-व्यक्ति, संदर्भ-दर-संदर्भ, या संस्कृति-दर-संस्कृति में भिन्न होती है? इसका उत्तर तात्त्विक सिद्धांतों (Substantial Theories) द्वारा दिया गया है।

(c) नैतिक निर्णयों का समर्थन या बचाव कैसे किया जा सकता है? अर्थात् नैतिक मूल्य कहाँ से आते हैं, उनका स्रोत और आधार क्या है? ये प्रश्न औचित्य सिद्धांतों (Justification Theories) में शामिल हैं।

1.5 मानकीय नीतिशास्त्र (Normative Ethics)

मानकीय नीतिशास्त्र उन नैतिक मानकों (Moral Standards) तक पहुँचने की कोशिश करता है, जो सही और गलत आचरण को विनियमित करते हैं। यह अधिक व्यावहारिक कार्य है। यह उचित व्यवहार के आदर्श परीक्षण (Proper Behavior) की खोज है। इसलिए, यह स्पष्ट रूप से कि 'क्या करना सही है?' जैसे प्रश्नों पर केंद्रित होता है। एक अर्थ में, यह उचित व्यवहार का एक आदर्श तरीका तलाशता है। यह नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों का अध्ययन है, जो यह सुझाव देता है कि लोगों को कैसे कार्य करना चाहिए? इसलिए, मानकीय नीतिशास्त्र को कभी-कभी वर्णनात्मक नीतिशास्त्र (Descriptive Ethics) के बजाय निर्देशात्मक (Prescriptive) कहा जाता है।

किसी भी कार्य के लिए, तीन चीज़ें होती हैं, जिन्हें नैतिक रूप से रोचक माना जा सकता है:

1. वह कर्ता, अर्थात् कार्य करने वाला व्यक्ति;
2. अपने आप में वह कृत्य;
3. कृत्य के परिणाम।

मानकीय नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों में केंद्र-बिंदु (Focus) के आधार पर उन्हें निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है:

1.5.1 सामान्य मानकीय नीतिशास्त्र (General Normative Ethics)

(i) परिणाम सापेक्ष/प्रयोजनवादी नीतिशास्त्र
(Consequential Ethics Teleological)

यह नीतिशास्त्र के प्रति एक दृष्टिकोण है, जो तर्क देता है कि किसी कार्य की नैतिकता कार्य के परिणाम या परिणति पर निर्भर होती है। इस प्रकार, एक नैतिक रूप से सही कार्यवाही वह है, जो एक अच्छा परिणाम या परिणति उत्पन्न करती है, और किसी कार्यवाही या नियम के परिणाम सामान्यतः अन्य सभी प्रतिफल से अधिक होते हैं (अर्थात्, साध्य साधन को उचित ठहराते हैं)।

परिणामवादी सिद्धांतों (Consequentialist Theories) की निम्नलिखित धाराएँ हैं:

(a) उपयोगितावाद (Utilitarianism)

उपयोगितावाद यह विचार है कि किसी कार्य का नैतिक मूल्य पूरी तरह से सभी लोगों के बीच प्रसन्नता या आनंद को अधिकतम करने में समग्र उपयोगिता में उसके योगदान से निर्धारित होता है।

- उपयोगितावाद, जो यह मानता है कि कोई कार्य सही है, यदि इससे अधिकतम लोगों को अधिक सुख मिलता है। (यहाँ "सुख" को आनंद को अधिकतम करने और पीड़ा को कम करने के रूप में परिभाषित किया गया है।)
- उपयोगितावाद इस आधार पर शुरू होता है कि आनंद और प्रसन्नता आंतरिक रूप से मूल्यवान होते हैं, पीड़ा और कष्ट आंतरिक रूप से मूल्यवान नहीं होते हैं, और किसी भी अन्य चीज़ का मूल्य केवल तभी होता है, जब वह प्रसन्नता उत्पन्न

करती है या दुख को रोकती है (अर्थात्, 'साधन के रूप में', या साध्य के साधन के रूप में)।

- 'उपयोगितावादी' 'समानता' को हितों के समान मानते हुए उसका समर्थन करते हैं तथा वे इस मनमाने भेद को अस्वीकार करते हैं कि कौन सरोकार/चिंता का पात्र है और कौन नहीं, तथा व्यक्तियों के बीच किसी भी प्रकार का भेदभाव अस्वीकार करते हैं।

चिंतन के एक विशिष्ट मत या शाखा के रूप में, इसका श्रेय सामान्यत: अंग्रेज़ी दार्शनिक जेरेमी बेंथम को दिया जाता है। बेंथम ने पीड़ा और प्रसन्नता को विश्व में एकमात्र आंतरिक मूल्य माना और इससे उन्होंने उपयोगिता का नियम निकाला कि अच्छा वह है, जो सबसे बड़ी संख्या में लोगों के लिए सबसे अधिक प्रसन्नता लाता है।

गुण (Merits)

- **सरल** (Straightforward): यह सरल है और पीड़ा को कम करने व सुख को अधिकतम करने के एकल सिद्धांत पर आधारित है। यह एक ऐसी प्रणाली है, जिसका लक्ष्य व्यक्तियों और समूहों के लिए खुशहाल जीवन बनाना है।
- **लोकतांत्रिक** (Democratic): नीतिगत निर्णय लोकतांत्रिक तरीके से लिए जा सकते हैं, यदि अधिकतम लोग नीति के पक्ष में मतदान करते हैं।
- **समुदाय का लाभ** (Community's Benefit): एक नीतिशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में उपयोगितावाद मुख्य रूप से 'व्यक्ति की भलाई' से अधिक 'समुदाय की भलाई' को महत्त्व देता है। उपयोगितावाद के आधार पर कोई भी निर्णय लेते समय व्यक्ति दूसरों के हित के बारे में भी सोचता है।
- **सार्वभौमिक** (Universal): उपयोगिता का सिद्धांत, जिसमें कष्ट को कम करना और प्रसन्नता को अधिकतम करना शामिल है, सार्वभौमिक माना जा सकता है तथा यह हर संस्कृति में लागू होता है।

दोष (Demerits)

- **साध्य हमेशा साधनों को उचित नहीं ठहराता** (Ends don't Always Justify Means): कल्पना कीजिए कि आपने एक स्वस्थ व्यक्ति की हत्या कर दी और 3 अन्य लोगों को बचाने के लिए उनके अंग दे दिए। 'हानि पर प्रसन्नता का संतुलन' (Balance of Happiness over Harm) ऐसा करने का समर्थन करता है, लेकिन हम जानते हैं कि यह सही नहीं है।
- **इच्छाओं या इरादों पर कोई विचार नहीं** (No Consideration of Desires or Intentions): उपयोगितावाद की आलोचना केवल कार्यों के परिणामों को देखने के लिए की गई है, न कि उन इच्छाओं या इरादों को देखने के लिए, जो उन्हें प्रेरित करते हैं और जिसे कई लोग महत्त्वपूर्ण भी मानते हैं। इस प्रकार, किसी कार्य का उद्देश्य नुकसान पहुँचाना हो, लेकिन अनजाने में अच्छे परिणाम देने वाले कार्य को अच्छे इरादों के साथ किए गए कार्य के परिणाम के बराबर आँका जाएगा।
- **बहुसंख्यकवाद** (Majoritarianism): बहुसंख्य की इच्छा गलत होने पर भी प्रबल हो सकती है।
- **अत्यधिक प्रसन्नता** (Immeasurable Happiness): हर प्रसन्नता को मापा नहीं जा सकता या उसकी तुलना नहीं की जा सकती। प्रसन्नता अत्यधिक व्यक्तिपरक (Subjective) होती है, तो सरकार को अपने नीतिगत निर्णयों में किस प्रसन्नता पर ध्यान देना चाहिए?

(b) स्वार्थवाद/अहंवाद (Egoism)

'स्वार्थवाद' यह सिद्धांत है कि 'व्यक्ति का स्वयं' (One's Own) ही उसके अपने कार्य की प्रेरणा और लक्ष्य होता है, या होना चाहिए। स्वार्थवाद के दो प्रकार होते हैं- वर्णनात्मक (Descriptive) और मानकीय/आदर्शात्मक (Normative)। वर्णनात्मक (या सकारात्मक) संस्करण मानवीय मुद्दों के तथ्यात्मक विवरण के रूप में स्वार्थवाद की कल्पना करता है, अर्थात् लोग अपने हितों और इच्छाओं से प्रेरित होते हैं और उन्हें अन्यथा वर्णित नहीं किया जा सकता है।

- मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद (Psychological Egoism), सबसे प्रसिद्ध वर्णनात्मक स्थिति है, जो दावा करती है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक ही अंतिम लक्ष्य होता है; इसी में उनका कल्याण निहित होता है।
- नीतिशास्त्रीय स्वार्थवाद (Ethical Egoism) का दावा है कि किसी कार्य को नैतिक रूप से सही होने के लिए यह आवश्यक और पर्याप्त है कि यह किसी के स्व-हित (Self-interest) को अधिकतम करे।

मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद और नीतिशास्त्रीय स्वार्थवाद 'है' (Is) बनाम 'चाहिए' (Ought), 'तथ्य' (Fact) बनाम 'मूल्य' (Value), या 'वर्णनात्मक' (Descriptive) बनाम 'निर्देशात्मक' (Prescriptive) के बीच के अंतर को दर्शाता है। मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद अवलोकनों से उत्पन्न एक वर्णनात्मक सिद्धांत है और यह कहता है कि हमारे सभी कार्य मूल रूप से स्वार्थ से प्रेरित होते हैं। यह इस बात का कोई दावा नहीं करता कि किसी व्यक्ति को कैसे कार्य करना चाहिए।

(ii) परिणाम निरपेक्षवादी या नियमवादी नीतिशास्त्र (Deontological Ethics)

नियमवाद/कर्त्तव्यशास्त्र (Deontology) (या नियमवादी नीतिशास्त्र) नीतिशास्त्र का एक दृष्टिकोण है, जो कार्यों के सही या गलत होने

पर ध्यान केंद्रित करता है। यह उन कार्यों के परिणामों की सही या गलत (परिणामवाद) या कर्ता के चरित्र और आदतों (सद्गुण नीतिशास्त्र) पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है।

'डिओन्टोलॉजी' ग्रीक शब्द "डीओन" (Deon) से उपजा है, जिसका अर्थ 'कर्त्तव्य' या 'दायित्व' होता है।

इमैनुएल कांट (Immanuel Kant)

आधुनिक दर्शन में इमैनुएल कांट (1724-1804) प्रमुख व्यक्ति हैं। उन्होंने आरंभिक आधुनिक बुद्धिवाद/तर्कवाद (Rationalism) और अनुभववाद (Empiricism) को संयोजित किया, जिसने 19वीं और 20वीं शताब्दी में दर्शन के एक बड़े हिस्से के लिए रूपरेखा स्थापित की और आज भी राजनीतिक दर्शन (Political Philosophy), सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics), तत्त्वमीमांसा (Metaphysics), नैतिकता (Ethics) और ज्ञानमीमांसा (Epistemology) सहित कई विषयों में बहुत प्रभावशाली हैं।

दर्शनशास्त्र में काण्ट के सबसे महान योगदानों में से एक उनका नैतिक सिद्धांत 'नियमवाद/कर्त्तव्यशास्त्र' (Deontology) था, जो कार्यों का मूल्यांकन इस आधार पर करता है कि वे कार्य के परिणाम के बजाय किसी वैध नियम का पालन करते हैं या नहीं।

कांट का सिद्धांत कहता है कि भले ही आप "झूठ न बोलने" जैसे नैतिक रूप से सही नियम का पालन करते हैं और परिणामस्वरूप लोगों को नुकसान उठाना पड़ता है, फिर भी, आपने सही कार्य किया है। तब से, परिणामवाद के साथ-साथ कर्त्तव्यशास्त्र, जो उपयोगितावाद को एक उदाहरण के रूप में लेता है और सद्गुण नीतिशास्त्र, जो अरस्तू के लेखन पर आधारित है, पश्चिमी परंपरा में तीन मुख्य नैतिक सिद्धांतों के रूप में उभरे हैं।

निरपेक्ष आदेश या निरपेक्ष नियोग या निरपवाद कर्त्तव्यादेश (Categorical Imperative): यह एक बिल्कुल सार्वभौमिक, गैर-परक्राम्य (Non-negotiable) नैतिक कानून है, जो संदर्भ की परवाह किए बिना लागू रहता है। सबसे सरल रूप में, यह बताता है कि किसी को केवल इस तरह से कार्य करना चाहिए कि आप चाहेंगे कि आपके कार्य एक सार्वभौमिक कानून बन जाएँ, जो समान स्थिति में सभी पर लागू हों। इसके अतिरिक्त, किसी को दूसरों के साथ केवल साधन के रूप में नहीं, बल्कि स्वयं के साध्य के रूप में व्यवहार करने का प्रयास करना चाहिए, इसलिए किसी व्यक्ति के साथ छेड़छाड़ करना, उसका दुरुपयोग करना या झूठ बोलना कभी भी सही नहीं हो सकता, चाहे वह दूसरों के हित में हो या व्यापक हित में ही क्यों न हो।

कांट नैतिक कानून के इस सार्वभौमिक रूप को 'निरपेक्ष आदेश' (Categorical Imperative) कहते हैं। यह 'निरपेक्ष' इसलिए है, क्योंकि यह 'काल्पनिक' (Hypothetical) से अलग है, जो केवल तभी एक शर्त लगाता है, जब कोई किसी लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। (उदाहरण के लिए, यदि मैं अपनी प्यास बुझाना चाहता हूँ, तो मुझे कुछ पीना होगा। यदि मैं इस परीक्षा को पास करना चाहता हूँ, तो मुझे अध्ययन करना होगा। यह 'कर्त्तव्यादेश/आदेश' (Imperative) है, क्योंकि इसमें बिना शर्त इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है या यह बाध्य होता है, जबकि इसमें शारीरिक रूप से स्वतंत्रता होती है।)

'निरपेक्ष आदेश' के कांट के तीन महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं:

- केवल उस सिद्धांत के अनुसार कार्य करें, जिसके द्वारा आप यह भी सुनिश्चित कर सकें कि यह एक सार्वभौमिक कानून बन जाएगा।
- इस तरह से कार्य करें कि आप हमेशा मानवता के साथ व्यवहार करें, चाहे वह आपके अपने व्यक्ति हों या अन्य व्यक्ति हों, कभी भी केवल एक साधन के रूप में नहीं, बल्कि हमेशा साध्य के रूप में मानें।
- प्रत्येक तर्कसंगत प्राणी को इस प्रकार कार्य करना चाहिए जैसे कि वह अपने सिद्धांत के माध्यम से हमेशा साध्यों के सार्वभौमिक साम्राज्य (Universal Kingdom of Ends) में एक विधायी सदस्य (Legislating Member) हो।

गुण (Merits)

- **मानव जाति के प्रति सम्मान** (Respect for Human Beings): मानव जाति को लक्ष्य/साध्य माना जाता है। इसलिए, यह सभी मनुष्यों के प्रति सम्मान देता है।
- **प्रेरणा को महत्त्व** (Motivation is Valued): यह परिणामों से अधिक प्रेरणा को महत्त्व देता है, जो हमारे नियंत्रण से परे हैं। एक अनैतिक उद्देश्य को अप्रत्याशित अच्छे परिणामों से उचित नहीं ठहराया जा सकता है, लेकिन एक अच्छा उद्देश्य मूल्यवान होता है।
- **दिशा-निर्देश प्रदान करना** (Provides Guidelines): यह संभावित परिणामों की कठिन गणना की आवश्यकता के बिना, नैतिक कार्य करने के लिए वस्तुनिष्ठ दिशा-निर्देश प्रदान करता है।
- **अल्पसंख्यक हितों का ध्यान रखना** (Minority Interest are taken Care of): चूँकि मानव को महत्त्व दिया जाता है, इसलिए बहुसंख्यकों के हितों को आगे बढ़ाने के लिए अल्पसंख्यकों को भी नुकसान नहीं पहुँचाया जाता है (उपयोगितावाद के विपरीत)।

दोष (Demerits)

- **प्राथमिकता का मुद्दा** (Priority Issue): 19वीं सदी के एक और उपयोगितावादी जॉन स्टुअर्ट मिल ने तर्क दिया कि कर्त्तव्यवादी (Deontologists) सामान्यत: यह निर्दिष्ट करने में विफल रहते हैं कि अधिकारों और कर्त्तव्यों का टकराव होने

पर किन सिद्धांतों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, इसलिए कर्त्तव्यशास्त्र पूर्ण नैतिक मार्गदर्शन प्रदान नहीं कर सकता है।

- **लोकप्रिय नैतिकता का एक संस्करण** (A Dressed-Up Version of Popular Morality): जेरेमी बेंथम जैसे उपयोगितावादियों ने इस आधार पर कर्त्तव्यशास्त्र की आलोचना की है कि यह अनिवार्य रूप से लोकप्रिय नैतिकता (Popular Morality) का एक छद्म संस्करण (Dressed-up Version) है, और यह वस्तुनिष्ठ और अपरिवर्तनीय सिद्धांत, जिन्हें कर्त्तव्यवादी प्राकृतिक कानून या सार्वभौमिक कारण मानते हैं, वास्तव में केवल व्यक्तिपरक राय (Subjective Opinion) का मामला है।
- **निरपेक्ष नियम** (Absolute Rules): यह निरपेक्ष/सार्वभौमिक नैतिक नियम निर्धारित करता है। लेकिन कई नैतिक नियम विशेष समय या स्थान से संबंधित होते हैं।
- **समग्र प्रसन्नता को कम कर सकती है** (May Reduce Overall Happiness): यह परिणामों में कोई रुचि नहीं रखता है। यह ऐसे कार्यों को जन्म दे सकता है, जो समग्र प्रसन्नता को कम कर सकते हैं।

सद्‌गुण नीतिशास्त्र (Virtue Ethics)

नैतिकता का वह सिद्धांत, जो सद्‌गुणों को केंद्रीय विषय बनाता है, सद्‌गुण नीतिशास्त्र कहलाता है।

'सद्‌गुण नीतिशास्त्र' नीतिशास्त्र का एक दृष्टिकोण है, जो नैतिक चिंतन के प्रमुख तत्त्व के रूप में व्यक्ति के चरित्र पर बल देता है। यह स्वयं कार्यों (कर्त्तव्यशास्त्र) या उनके परिणामों (परिणामवाद) के बारे में नियमों पर बल नहीं देता है।

कर्म उन्मुख जीवन (Action Oriented Life) एक धारणा पर आधारित होता है कि आप क्या करना चाहते हैं? लेकिन सद्‌गुणी जीवन में यह प्रश्न शामिल होता है कि 'आप क्या बनना चाहते हैं?' या 'आप किस तरह का व्यक्ति बनने की आकांक्षा रखते हैं?' उदाहरण के लिए, एक अच्छे बढ़ई (Carpenter) का लक्ष्य सौंदर्यशास्त्र की अच्छी समझ होना है।

सद्‌गुण या सद्‌गुण नीतिशास्त्र का अर्थ (Meaning of Virtue/ Virtue Ethics)

सद्‌गुण का तात्पर्य किसी व्यक्ति में नैतिक उत्कृष्टता, या नैतिक रूप से विशिष्ट सराहनीय गुण या मूल्य से है। शास्त्रीय नीतिशास्त्र (Classical Ethics) में सद्‌गुण एक अंतिम लक्ष्य निर्मित करते हैं– एक विचार, जो वाक्यांश "सद्‌गुण ही अपना पुरस्कार है" (Virtue is its Own Reward) में समाहित है।

20वीं शताब्दी में सद्‌गुण नीतिशास्त्र पुनर्जीवित हुआ और तब से इसे तीन मुख्य दिशाओं में विकसित किया गया। यूडेमोनिज़्म या परमसुखवाद (Eudaimonism), कर्ता-आधारित सिद्धांत (Agent-based Theories) और देखभाल का नीतिशास्त्र (Ethics of Care)।

यूडेमोनिज़्म के अनुसार, 'सद्‌गुण' मानव उत्कर्ष पर आधारित होते हैं, जिसे किसी की अद्वितीय भूमिका को सफलतापूर्वक निभाने के रूप में परिभाषित किया जाता है।

कर्ता-आधारित सिद्धांत के अनुसार, सद्‌गुण को सामान्य ज्ञान वृत्ति (Common Sense Instincts) द्वारा परिभाषित किया जाता है, जिसे हम, पर्यवेक्षक के रूप में, अन्य लोगों में सराहनीय पाते हैं।

देखभाल के नीतिशास्त्र का तर्क है कि अधिक स्त्रैण गुणों (Feminine Qualities), जैसे- पोषण और देखभाल, को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसके द्वारा इस धारणा को चुनौती दी गई कि नीतिशास्त्र का संबंध केवल न्याय और स्वायत्तता से होना चाहिए।

सद्‌गुण दो प्रकार के होते हैं, वे हैं- बौद्धिक सद्‌गुण (Intellectual Virtues) और नैतिक सद्‌गुण (Moral Virtues) हैं। बौद्धिक सद्‌गुण वे होते हैं, जिन्हें सिखाया और सीखा जा सकता है। उदाहरण के लिए- विवेक; यह हम दूसरों से आसानी से सीख सकते हैं कि विवेकपूर्ण कैसे बनें। जो कार्य आदत बन जाए, उसे बार-बार करने से नैतिक सद्‌गुण विकसित किए जा सकते हैं। ये संस्कारित आदतें (Cultivated Habits) परम सुख की प्राप्ति कराती हैं।

अरस्तू भी यह कहते हैं कि 'सद्‌गुण' एक स्वर्णिम मध्य (Golden Mean) है, जो दो चरम सीमाओं के बीच में स्थित है। उदाहरण के लिए, एक नैतिक सद्‌गुण के रूप में 'साहस' कायरता और मूर्खता नामक दो चरम सीमाओं के बीच स्थित है।

अरस्तू के अनुसार, 4 महत्त्वपूर्ण सद्‌गुण हैं- बुद्धि (Wisdom), विवेक (Prudence), संयम (Temperance) और धैर्य (साहस) [Fortitude (Courage)]।

1.5.2 व्यावहारिक या अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics)

'व्यावहारिक नीतिशास्त्र' नीतिशास्त्र की एक शाखा है, जो पेशेवर, अनुशासनात्मक या व्यावहारिक क्षेत्र के लिए विशिष्ट नैतिक प्रश्नों से संबंधित होती है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन, दोनों में दुविधाओं (Dilemmas) को हल करने के लिए नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों या नैतिक सिद्धांतों के ज्ञान का उपयोग करने में मदद करता है। व्यावहारिक नीतिशास्त्र दर्शन की सबसे प्रभावशाली शाखाओं में से एक है और यह समाज में निर्णय लेने का एक उपयोगी उपकरण बन गई है।

'मानकीय नीतिशास्त्र' इस बात से संबंधित है कि लोगों को क्या सही और गलत मानना चाहिए, जबकि 'अधि-नीतिशास्त्र' नैतिक कथनों की प्रकृति से संबंधित है। 'व्यावहारिक नीतिशास्त्र' इन दोनों ही नीतिशास्त्रों से अलग है। व्यावहारिक नीतिशास्त्र पशु अधिकार, इच्छामृत्यु (Euthanasia), गर्भपात, अंग प्रत्यारोपण आदि विशिष्ट

व विवादास्पद नैतिक मुद्दों के विश्लेषण और व्याख्या से संबंधित होता है।

उदाहरण के लिए, जैव-नैतिक समुदाय (Bioethics Community), जीवन विज्ञान में नैतिक मुद्दों, जैसे- इच्छामृत्यु, दुर्लभ स्वास्थ्य संसाधनों (Scarce Health Resources) का आवंटन, या अनुसंधान में मानव भ्रूण के उपयोग के लिए सही दृष्टिकोण की पहचान करने से संबंधित होता है।

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र (Environmental Ethics) पारिस्थितिकी मुद्दों, जैसे- प्रदूषण नियंत्रण करने के लिए सरकार और निगमों की ज़िम्मेदारी से संबंधित है।

A मीडिया नीतिशास्त्र (Media Ethics)

मीडिया इतना प्रभावशाली है कि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पत्रकार लोगों के लिए दैनिक निर्णय लेते हैं। व्यक्तियों की राय, दृष्टिकोण और आचरण उनके पास उपलब्ध जानकारी तथा उन पर अंकित चित्रों और भावनाओं की प्रकृति पर निर्भर करते हैं। समसामयिक घटनाओं के बारे में हमारा अधिकांश ज्ञान हमें समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न और फिल्मों से मिलता है।

मीडिया नीतिशास्त्र इस सवाल से चिंतित है कि मीडिया द्वारा जानकारी और समाचार एकत्र करने व प्रस्तुत करने के साधनों एवं तरीकों के बारे में क्या सही या गलत, क्या अच्छा या बुरा, क्या स्वीकार्य या अस्वीकार्य है। यह नैतिक सिद्धांतों के साथ मीडिया के व्यावहारिक पहलू को निर्देशित करने और नियंत्रित करने की मानकीय (Normative) और अनुदेशात्मक (Prescriptive) प्रकृति के बारे में भी है।

जनता के 'सत्य जानने के अधिकार' और किसी 'व्यक्ति की निजता' के दावे के बीच हमेशा तनाव रहता है। वे निर्णय, नैतिक निर्णय लेने के उपकरणों पर आधारित होते हैं, जिनमें औपचारिक नैतिक संहिता (Formal Code of Ethics) शामिल हो सकती है। मीडिया नीतिशास्त्र सूचना प्रसार पर किसी भी एकाधिकार को रोकने की कोशिश करती है। मीडिया किसी विषय-वस्तु पर एकल वर्चस्व के बजाय बहुलवाद को कायम रखती है, जो सामान्य तौर पर सत्तावादी व्यवस्था (Authoritarian Regimes) द्वारा लाई जाती है। यह किसी मुद्दे के विभिन्न पक्ष प्रदान करके निष्पक्षता बनाए रखती है, जो दर्शकों को अपने स्वयं के निर्णय-निर्माण के लिए सशक्त बनाती है और रिपोर्टिंग में सच्चाई के स्तर को बढ़ाती है।

मीडिया को सामान्य रूप से नियमित करने के लिए निम्नलिखित संहिता तैयार की गई है:

- **उत्तरदायित्व** (Responsibility): किसी समाचार-पत्र का पाठकों को आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने का अधिकार केवल लोक कल्याण के विचारों से ही प्रतिबंधित है। एक पत्रकार, जो अपनी शक्ति का उपयोग किसी स्वार्थी या अन्यथा अयोग्य उद्देश्य के लिए करता है, वह भरोसे के योग्य नहीं होता है।
- **स्वतंत्रता** (Independence): सार्वजनिक हित के प्रति निष्ठा (Fidelity) के अलावा, सभी दायित्वों से मुक्ति अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
- **ईमानदारी, सच्चाई, सटीकता** (Sincerity, Truthfulness, Accuracy): ये मीडिया को पाठक के साथ अच्छा तालमेल बनाने में सक्षम बनाते हैं।
- **निष्पक्षता** (Impartiality): समाचार रिपोर्टों और विचारों की अभिव्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वे किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त हों।
- **न्यायपूर्ण-व्यवहार** (Fairplay): निजी अधिकारों और सार्वजनिक हित का प्रश्न, जो सार्वजनिक जिज्ञासा (Public Curiosity) से अलग है। साथ ही, यह मीडिया का विशेषाधिकार और कर्त्तव्य भी है कि वह अपनी तथ्यात्मक गंभीर त्रुटियों को तुरंत और पूर्ण रूप से सुधारे।

मीडिया नीतिशास्त्र के मुद्दे (Issues of Media Ethics)

- **समाचार हेरा-फेरी** (News Manipulation): खबरों में हमेशा हेरा-फेरी की जा सकती है। सरकारें और निगम समाचार में हेर-फेर करने का प्रयास कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, सरकारें सेंसरशिप द्वारा, और निगम शेयर स्वामित्व द्वारा ऐसे कार्य करती हैं। हेर-फेर की विधियाँ सूक्ष्म और अनेक हैं। हेर-फेर स्वैच्छिक या अनैच्छिक हो सकता है। जिन लोगों के साथ छेड़छाड़ की जा रही है, उन्हें शायद इसकी जानकारी भी नहीं होती है।
- **सत्य/पारदर्शिता और अन्य मूल्यों के बीच संघर्ष** (Conflict between Truth/Transparency and other Values):
  - **सार्वजनिक हित** (Public Interest): सैन्य गोपनीय जानकारी और अन्य संवेदनशील सरकारी सूचनाओं का खुलासा सार्वजनिक हित के विपरीत हो सकता है, भले ही वह ही सच क्यों न हो। हालाँकि, सार्वजनिक हित एक ऐसा शब्द है, जिसे परिभाषित करना आसान नहीं है।
  - **निजता** (Privacy): सार्वजनिक हस्तियों (Public Figures) के जीवन के दिलचस्प विवरण कई समाचारों में एक केंद्रीय विषय-वस्तु होते हैं। इनका प्रकाशन केवल इसलिए उचित नहीं है, क्योंकि जानकारी सत्य है। 'निजता' भी एक मूल अधिकार है और यह वाक्/अभिव्यक्ति (भाषण) की स्वतंत्रता के साथ टकराता है।
  - **कल्पना** (Fantasy): 'कल्पना' मनोरंजन का एक तत्त्व होता है, जो मीडिया विषय-वस्तु का एक वैध लक्ष्य है। पत्रकारिता में कल्पना और सच्चाई का मिश्रण हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक दुविधाएँ हो सकती हैं।

- **रुचि** (Taste): युद्ध और आपदाओं को कवर करने वाले फोटो-पत्रकारों को ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके दर्शकों की संवेदनाओं को झकझोर सकती हैं। उदाहरण के लिए, मानव अवशेषों (Human Remains), अर्थात् क्षत-विक्षत शव के टुकड़ों को शायद ही कभी स्क्रीन पर दिखाया जाता है। नैतिक मुद्दा यह है कि सच्चाई को सही ढंग से और पूरी तरह से रिपोर्ट करने के लिए दर्शकों की संवेदनशीलता को झकझोरने (Shocking) का जोखिम कितना है।
- **कानून** (Law): गोपनीय समाचार स्रोतों की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर पत्रकारिता नीतिशास्त्र (Journalistic Ethics) का कानून के साथ टकराव हो सकता है। एक प्रश्न यह भी है कि समाचार प्राप्त करने के लिए कानून तोड़ना किस हद तक नैतिक रूप से स्वीकार्य है? उदाहरण के लिए, अंडरकवर रिपोर्टर धोखे, अतिक्रमण और इसी तरह के अपकृत्यों तथा अपराधों में संलग्न हो सकते हैं।

- **ऑनलाइन पत्रकारिता** (Online Journalism): इंटरनेट ने ऑनलाइन पत्रकारों और ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करने वाले पत्रकारों, दोनों के लिए विभिन्न नीतिशास्त्रीय और नैतिक मुद्दों को आकार दिया है और उन्हें पुनर्परिभाषित किया है। ऑनलाइन पत्रकारिता में, मीडिया नीतिशास्त्र के कुछ मुख्य मुद्दों में व्यावसायिक दबाव, सटीकता और विश्वसनीयता (जिसमें हाइपरलिंक से संबंधित मुद्दे शामिल हैं), तथ्यों का सत्यापन, विनियमन, गोपनीयता और समाचार एकत्र करने के तरीके आदि शामिल हैं।
- **मनोरंजन मीडिया** (Entertainment Media): मनोरंजन मीडिया नीतिशास्त्र (Ethics) के मुद्दों में शामिल हैं:
  - हिंसा और सेक्स का चित्रण तथा सशक्त भाषा (Strong Language) की उपस्थिति। इस क्षेत्र में नैतिक दिशा-निर्देश और कानून लगभग सभी के लिए समान हैं और कई मीडिया (जैसे फिल्म, कंप्यूटर गेम) 'एजेंसियों' के रेटिंग तंत्र और पर्यवेक्षण के अधीन होते हैं।
  - **'फ्लफ' या 'सेलिब्रिटी समाचार'** ('Fluff' or 'Celebrity News'): पिछले कुछ वर्षों से, प्रिंट मीडिया का प्रभाव कम हो रहा है, इसलिए पत्रकारों ने उस पर रिपोर्ट करना शुरू कर दिया, जिसे "सेलिब्रिटी न्यूज़" या "फ्लफ" कहा जाता है। जैसे-जैसे अधिक आउटलेट रिपोर्ट करने के लिए इस विषय को अपनाते हैं, लोग उन पर निर्भर होते जाते हैं। अधिकांश लोग नैतिक विसंगतियों (Ethical Discrepancies) के कारण इन आउटलेट्स पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करते हैं, लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है, जब जो लोग उतने परिपक्व या शिक्षित नहीं होते हैं और उन्हें ये रिपोर्ट्स पूरी तरह से सच लगने लगती हैं।
  - **उत्पाद स्थापन** (Product Placement): मनोरंजन मीडिया में उत्पादों का स्थापन एक आम विपणन रणनीति (Marketing Tactic) है। ऐसे मीडिया के निर्माताओं को ब्रांडेड उत्पाद प्रदर्शित करने के लिए उच्च रकम का भुगतान किया जा सकता है। यह प्रथा विवादास्पद है और काफ़ी हद तक गैर-विनियमित है।
  - **विज्ञापन** (Advertising): वर्तमान में, आधुनिक पत्रकारिता में आकर्षण और अनुनयन (Persuasion) देखने को मिलते हैं। यह पाया गया है कि विज्ञापन के ये तरीके यथार्थवादी और झूठी जानकारी के बारे में दर्शकों के दृष्टिकोण को बदल सकते हैं।
  - **रूढ़िवादिता** (Stereotypes): विज्ञापन और मनोरंजन मीडिया, दोनों ही रूढ़िवादिता का अत्यधिक उपयोग करते हैं। रूढ़िवादिता लोगों की स्वयं के बारे में धारणाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है या सामाजिक रूप से अवांछनीय व्यवहार को बढ़ावा दे सकती है। पुरुषों, संपन्नता और जातीय समूहों का रूढ़िवादी चित्रण (Stereotypical Portrayals), बहस के प्रमुख क्षेत्रों के उदाहरण हैं।
  - **मीडिया में महिलाएँ** (Women in Media): मनोरंजन मीडिया अकसर महिला की देह का वस्तुकरण (Objectification) और मनुष्यत्व के गुण से वंचित करके उनका शोषण करता है। ऐसा करने से महिलाओं के शरीर की ख़रीद-फ़रोख्त की अवधारणा आम हो जाती है।
  - मीडिया आउटलेट सामान्यत: दिन भर में परोसी जाने वाली नकारात्मक खबरों का मुकाबला करने के लिए या तो महिला देह की छवियों या चित्रण का उपयोग करते हैं।
  - **रुचि और वर्जनाएँ** (Tastes and Taboos): मनोरंजन मीडिया अकसर कलात्मक और मनोरंजन उद्देश्यों के लिए हमारे मूल्यों पर प्रश्न उठाता है। मानकीय नीतिशास्त्र अकसर नैतिक मूल्यों, और किस तरह के मूल्यों को लागू और संरक्षित किया जाना चाहिए, के बारे में होता है। मीडिया नीतिशास्त्र में, ये दोनों पक्ष टकराव में आ जाते हैं। कला के नाम पर, मीडिया जानबूझकर मौजूदा मानदंडों को तोड़ने और दर्शकों को चौंकाने का प्रयास कर सकती है। इससे नैतिक समस्याएँ तब उत्पन्न होती हैं, जब पालन न किए जाने वाले मानदंड कुछ प्रासंगिक नैतिक मूल्यों या दायित्वों से निकटता से जुड़े होते हैं। यह किस हद तक स्वीकार्य है, हमेशा नैतिक विवाद का केंद्र बना रहता है।

B. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र (Environmental Ethics)

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र का एक नई उप-शाखा (Sub-discipline) है, जो पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी नैतिक समस्याओं के समाधान का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए नैतिक औचित्य (Ethical Justification) और नैतिक अभिप्रेरण (Moral Motivation) प्रदान करना है।

यह मनुष्य और उनके पर्यावरण से संबंधित कई नैतिक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, क्या मनुष्यों को मानव उपभोग के लिए जंगलों को काटने का कार्य जारी रखना चाहिए?

- मनुष्य को भावी पीढ़ियों के लिए कौन-से पर्यावरणीय दायित्व निभाने की आवश्यकता है?
- क्या मनुष्य के लिए मानवता की सुविधा के लिए जानबूझकर किसी प्रजाति के विलुप्त होने का कारण बनना सही है?
- जीवन को सुरक्षित और विस्तारित करने के लिए मनुष्य को स्थान व पर्यावरण का सर्वोत्तम उपयोग एवं संरक्षण कैसे करना चाहिए?

यह तीन अंतर्दृष्टियों (Insights) से विकसित हुआ। पहला, यह नीतिशास्त्र प्राकृतिक प्राणियों, प्रकृति या पृथ्वी के विचार के बिना नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि पृथ्वी पर सभी प्राणी आपस में सहसंबद्ध हैं; दूसरा, नीतिशास्त्र के दायरे में भविष्य के परिणाम शामिल होने चाहिए, और इसलिए नीतिशास्त्र में अंतर-पीढ़ीगत दृष्टिकोण होना चाहिए; तीसरा, यह स्वीकार किए बिना उचित नीतिशास्त्र का निर्माण नहीं किया जा सकता है कि मानव जीवन केवल पृथ्वी की उचित स्थिति और स्वास्थ्य पर उचित विचार करने से ही संभव है।

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र की कई विशिष्ट विशेषताएँ हैं, जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है:

- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र का विस्तार किया गया है। परंपरागत नीतिशास्त्र मुख्य रूप से अंतर-मानवीय कर्त्तव्यों (Intrahuman Duties), विशेष रूप से समकालीनों के बीच कर्त्तव्यों से संबंधित है। पर्यावरणीय नीतिशास्त्र किसी के समुदाय और राष्ट्र से परे नैतिक चिंताओं का दायरा बढ़ाता है, जिसमें न केवल प्रत्येक स्थान के सभी लोगों को शामिल किया जाता है, बल्कि जानवरों और संपूर्ण प्रकृति - जीवमंडल - को वर्तमान और आसन्न भविष्य से परे भावी पीढ़ियों को भी शामिल किया जाता है।
- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र अंतर-विषयक (Interdisciplinary) है। उदाहरण के लिए, पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, पर्यावरणीय राजनीति, पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, पर्यावरणीय विज्ञान और पर्यावरणीय साहित्य के बीच कई अतिव्यापन (Over Lapping) और सर्वसम्मति के क्षेत्र हैं। इन विषयों के विशिष्ट दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली पर्यावरणीय नीतिशास्त्र के लिए महत्त्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान करते हैं, और पर्यावरणीय नीतिशास्त्र इन विषयों के लिए मूल्य-आधार (Value Foundations) प्रदान करता है। ये एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं, प्रभावित करते हैं और समर्थन करते हैं।
- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र को विविध या मिश्रित माना जाता है। अपनी उत्पत्ति के समय से ही, पर्यावरणीय नीतिशास्त्र एक ऐसा क्षेत्र रहा है, जिसमें विभिन्न विचार और दृष्टिकोण एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं।

  मानव-केंद्रवाद (Anthropocentrism), पशु मुक्ति/अधिकार सिद्धांत, जैव-केंद्रवाद (Biocentrism) और पारिस्थितिकी-केंद्रवाद (Ecocentrism) सभी पर्यावरण संरक्षण के लिए अद्वितीय और कुछ अर्थों में, उचित नैतिक औचित्य प्रदान करते हैं। उनके दृष्टिकोण अलग-अलग हैं, लेकिन उनके लक्ष्य बड़े पैमाने पर एक ही हैं। वे इस आम सहमति पर पहुँच गए हैं कि पर्यावरण की रक्षा करना सभी का कर्त्तव्य है।

  पर्यावरणीय नीतिशास्त्र के बुनियादी विचारों को विभिन्न सुस्थापित सांस्कृतिक परंपराओं से भी समर्थन मिलता है और वे उनमें सन्निहित होते हैं। पर्यावरणीय नीतिशास्त्र की जीवंतता बनाए रखने के लिए सिद्धांतों और बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोणों का बहुलवाद महत्त्वपूर्ण है।
- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र वैश्विक होता है। पारिस्थितिक संकट एक वैश्विक मुद्दा है। पर्यावरण प्रदूषण राष्ट्रीय सीमाओं में सीमित नहीं होता है। कोई भी देश इस मुद्दे का अकेले मुकाबला नहीं कर सकता है। वैश्विक पर्यावरणीय संकट का मुकाबला करने के लिए, मनुष्य को कुछ मूल्यों पर सर्वसम्मति निर्मित करनी चाहिए और व्यक्तिगत, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, बहुराष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर एक-दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिए। वैश्विक पर्यावरण संरक्षण, वैश्विक शासन (Global Governance) पर निर्भर करता है। इसलिए, एक पर्यावरणीय नीतिशास्त्र सामान्य तौर पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य वाला एक वैश्विक नीतिशास्त्र होता है।

कुछ विद्वानों ने प्राकृतिक पर्यावरण को महत्त्व देने के विभिन्न तरीकों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया है।

C. व्यावसायिक नीतिशास्त्र (Professional Ethics)

व्यावसायिक नीतिशास्त्र पेशेवर जीवन का नीतिशास्त्र (Ethics of Professional Life) या कार्य का नीतिशास्त्र (Ethics of Work) है। व्यावसायिक नीतिशास्त्र में पेशेवरों द्वारा अपेक्षित व्यवहार के व्यक्तिगत और निगम-संबंधी (Corporate) मानक शामिल होते हैं। पेशेवर और स्वीकृत व्यवसायों में काम करने वाले लोग विशेषज्ञ ज्ञान और कौशल का प्रयोग करते हैं। जनता को सेवा प्रदान करते

समय इस ज्ञान का उपयोग कैसे विनियमित किया जाना चाहिए, इसे एक नैतिक मुद्दा माना जा सकता है और इसे पेशेवर या व्यावसायिक नीतिशास्त्र कहा जाता है।

व्यावसायिक नीतिशास्त्र में निर्णय लेने, कौशल का अनुप्रयोग करने और उन स्थितियों में सूचित निर्णय (Informed Decisions) लेने की क्षमता शामिल है, जो आम जनता नहीं कर सकती, क्योंकि उन्होंने आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त नहीं किए हैं। व्यावसायिक नीतिशास्त्र के सबसे शुरुआती उदाहरणों में से एक हिपोक्रैटिक शपथ (Hippocratic Oath) है, जिसका चिकित्सा डॉक्टर आज भी पालन करते हैं।

ये ऐसे नैतिक मानदंड और कर्त्तव्य हैं, जो सभी या कम-से-कम अधिकांश विभिन्न कार्यों के लिए सामान्य हैं। इन्हें व्यावसायिक संबंधों के अनुसार विभाजित किया जा सकता है:

- **व्यावसायिक कार्य और सेवा पर निर्भर लोगों से संबंध** (Relations to People Dependent on Professional Work and Service)**:** इन संबंधों में, उदाहरण के लिए शिक्षक और छात्र, डॉक्टर और मरीज़, सेल्समैन और ग्राहक आदि के बीच संबंध शामिल हैं और वे ईमानदारी, विश्वसनीयता और सुरक्षा जैसे पेशेवर नैतिक मानदंड सृजित करते हैं।
- **सहकर्मियों से संबंध** (Relations to Workmates)**:** लगभग सभी कर्मचारियों के पास सहकर्मी और सहयोगी होते हैं। सहकर्मियों के बीच का संबंध निष्ठा और एकजुटता के पेशेवर नैतिक मानदंड उत्पन्न करता है।
- **नियोक्ताओं से संबंध** (Relations to Employers)**:** अधिकांश व्यावसायिक कार्य रोज़गार अनुबंध (Employment Contract) द्वारा विनियमित रोज़गार के रूप में किया जाता है। एक पेशेवर का संबंध एक नियोक्ता से होता है। यहाँ तक कि ये संबंध नैतिक मानदंड भी सृजित करते हैं, उदाहरण के लिए निष्ठा (Loyalty) और गोपनीयता एवं डेटा गोपनीयता तथा बौद्धिक संपदा अधिकारों का पालन।

इस प्रकार, विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक संबंध नैतिक मानदंडों के विभिन्न समुच्चय सृजित करते हैं। ये मानदंड किसी पेशे का बुनियादी नैतिक ढाँचा प्रदान करते हैं। हालाँकि, वे प्रथम दृष्टया वैध होते हैं। यदि पेशेवर नैतिक मानदंड अन्य नैतिक मानदंडों के साथ संघर्ष में आते हैं, उदाहरण के लिए- सामान्य नैतिकता के साथ, तो उन्हें उपेक्षित (Overridden) किया जा सकता है।

अधिकांश पेशेवरों ने आंतरिक रूप से अभ्यास या प्रक्रियाओं की संहिताएँ लागू की हैं, जिनका पेशे के सदस्यों को ग्राहक का शोषण रोकने और पेशे की अखंडता बनाए रखने के लिए पालन किया जाना चाहिए। यह न केवल ग्राहक के लाभ के लिए है, बल्कि उस पेशे से जुड़े लोगों के भी लाभ के लिए है। अनुशासनात्मक संहिता (Disciplinary Code) 'पेशे' को आचरण के एक मानक को परिभाषित करने की अनुमति देती है और यह सुनिश्चित करती है कि व्यक्तिगत चिकित्सक इस मानक को पूरा करें। यदि वे इसके अनुसार अभ्यास नहीं करते हैं, तो उन्हें पेशेवर निकाय से अनुशासित किया जाता है। यह उन पेशेवरों को, जो विवेक के साथ काम करते हैं, इस ज्ञान के साथ अभ्यास करने की अनुमति देता है कि उन्हें उन लोगों द्वारा व्यावसायिक रूप से कमज़ोर नहीं किया जाएगा, जिनके पास कम नैतिक योग्यताएँ हैं। यह पेशे में जनता के विश्वास को भी बनाए रखता है और जनता को उनकी सेवाएँ लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

D. व्यवसाय या व्यापार नीतिशास्त्र (Business Ethics)

व्यापार नीतिशास्त्र व्यावहारिक नीतिशास्त्र का एक रूप है। यह उन नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों और नीतिशास्त्रीय या नैतिक समस्याओं का परीक्षण करता है, जो व्यापार वातावरण में उत्पन्न हो सकती हैं। यह व्यवसाय आचरण के सभी पहलुओं पर लागू होता है और व्यक्तियों व संपूर्ण संगठनों के आचरण के लिए प्रासंगिक होता है। यह नीतिशास्त्र व्यक्तियों, संगठनात्मक वक्तव्यों (Organizational Statements) या कानूनी प्रणाली से उत्पन्न होता है। इन मानदंडों, मूल्यों, नैतिक और अनैतिक प्रथाओं का उपयोग व्यवसाय को निर्देशित करने के लिए किया जाता है। ये उन व्यवसायों को उनके हितधारकों के साथ बेहतर संबंध बनाए रखने में मदद करते हैं।

कार्यात्मक व्यापार क्षेत्रों में मुद्दे (Issues in Functional Business Areas)

(i) वित्त (Finance)

'वित्त' को अकसर लोग नैतिक बोझ (Ethical Burden) से मुक्त विषय समझने की भूल करते हैं। वर्ष 2008 के वित्तीय संकट के कारण आलोचकों ने अमेरिकी और यूरोपीय वित्तीय संस्थानों व वित्तीय नियामक निकायों के प्रभारी अधिकारियों की नैतिकता को चुनौती दी। वित्त नीतिशास्त्र (Finance Ethics) को एक अन्य कारण से नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, वह है- वित्त में मुद्दों को अकसर नीतिशास्त्र के बजाय कानून के मामलों के रूप में संबोधित किया जाता है। हालिया 'पंजाब नेशनल बैंक धोखाधड़ी' वित्त में नीतिशास्त्र की आवश्यकता पर बल देती है।

(ii) मानव संसाधन प्रबंधन (Human Resource Management)

मानव संसाधन प्रबंधन भर्ती, चयन, अभिविन्यास (Orientation), प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance Appraisal), प्रशिक्षण और विकास, औद्योगिक संबंध और स्वास्थ्य व सुरक्षा मुद्दों की गतिविधि के क्षेत्र में आता है।

रोज़गार, गोपनीयता, तुलनात्मक मूल्य के अनुरूप मुआवज़ा, सामूहिक सौदेबाजी सहित मुद्दों को या तो अहस्तांतरणीय अधिकारों के रूप में या परक्राम्य के रूप में देखा जा सकता है। आयु (युवा या वृद्ध को प्राथमिकता देना), लैंगिक/यौन उत्पीड़न, जाति, धर्म,

विकलांगता, वज़न और आकर्षण के आधार पर भेदभाव आदि संभावित कर्मचारियों का नियोक्ताओं के प्रति नैतिक दायित्व है, जिसमें बौद्धिक संपदा संरक्षण और व्हिसल-ब्लोइंग शामिल है।

नियोक्ताओं को कार्यस्थल सुरक्षा पर विचार करना चाहिए, जिसमें कार्यस्थल को संशोधित करना, या उचित प्रशिक्षण अथवा जोखिम प्रकटीकरण प्रदान करना शामिल हो सकता है। यह कार्य के स्थान और प्रकार के आधार पर विभेद करता है। कार्यस्थल सुरक्षा के तहत कर्मचारियों और गैर-कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए मानकों का अनुपालन करने की आवश्यकता होती है।

आप्रवासन (Immigration), व्यापार नीति, वैश्वीकरण और व्यापार संघवाद जैसे बड़े आर्थिक मुद्दे कार्यस्थलों को प्रभावित करते हैं और इनका एक नैतिक आयाम होता है, लेकिन ये अकसर व्यक्तिगत कंपनियों के दायरे से बाहर होते हैं।

(iii) विक्रय और विपणन (Sales and Marketing)

विपणन में नीतिशास्त्र उन सिद्धांतों, मूल्यों और/या आदर्शों से संबंधित है, जिनके अनुसार विपणक/Marketer (और विपणन संस्थान) को कार्य करना चाहिए। नैतिक विपणन मुद्दों में अनावश्यक या ख़तरनाक उत्पादों/सेवाओं का विपणन न करना, पर्यावरणीय जोखिमों के बारे में पारदर्शिता, आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों जैसे उत्पाद अवयवों के बारे में पारदर्शिता, संभावित स्वास्थ्य जोखिम, वित्तीय जोखिम, सुरक्षा जोखिम आदि, उपभोक्ता गोपनीयता और स्वायत्तता के लिए सम्मान, विज्ञापन की सच्चाई और मूल्य निर्धारण और वितरण में निष्पक्षता शामिल होते हैं।

(vi) बौद्धिक संपदा (Intellectual Property)

बौद्धिक संपदा (IP) में विचारों, अवधारणाओं, कोड और सूचनाओं (Codes and Information) की अभिव्यक्ति शामिल होती है। IPR पर एक हमला उपयोगितावादी के बजाय नैतिक होता है, जिसमें दावा किया जाता है कि आविष्कार अधिकतर सामूहिक, संचयी, पथ पर निर्भर (Path Dependent), सामाजिक सृजन की प्रकृति के होते हैं और इसलिए, किसी एक व्यक्ति या फ़र्म को सीमित अवधि के लिए भी उन पर एकाधिकार करने में सक्षम नहीं होना चाहिए। कुछ लोग दावा करते हैं कि IPR कृत्रिम कमी (Artificial Scarcity) पैदा करता है और समानता को कम करता है। विरोधी तर्क यह है कि जब पेटेंट नवप्रवर्तकों और उनके निवेशकों को अपनी प्रतिबद्धताएँ बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो नवप्रवर्तन के लाभ जल्दी पहुँचते हैं। एक उदारवादी (Libertarian) दार्शनिक का मानना है कि नैतिक रूप से, किसी भी प्रकार के संपत्ति अधिकारों को व्यक्तियों के अपने जीवन को नियंत्रित करने के अधिकार के विस्तार के रूप में उचित ठहराया जाना चाहिए।

नैतिक और कानूनी मुद्दे (Ethical and Legal Issues): पेटेंट उल्लंघन, कॉपीराइट उल्लंघन, ट्रेडमार्क उल्लंघन, पेटेंट और कॉपीराइट का दुरुपयोग, जैविक पेटेंट, बायोप्रोस्पेक्टिंग, बायोपाइरेसी और औद्योगिक जासूसी, डिजिटल अधिकार प्रबंधन।

(vii) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीतिशास्त्र (International Business Ethics)

1990 के दशक के उत्तरार्ध में ही अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीतिशास्त्र विशेष रूप से वैश्विक स्तर पर हुए आर्थिक विकास के बाद सामने आया है।

1990 के दशक में विकासशील देशों के कई व्यवसायों ने अपने परिचालन का विस्तार किया और वे बहुराष्ट्रीय बन गए। परिणामस्वरूप, व्यवसायों और सरकारों के बीच लेन-देन में वृद्धि हुई, जिससे कई व्यावहारिक मुद्दे सामने आए। संस्कृति और इसकी सापेक्षता अन्य कारकों की तुलना में अधिक प्रमुख कारक थी। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में, अन्य नैतिक मुद्दों का सामान्यतः देश के कानूनों द्वारा समाधान किया जाता है; हालाँकि ये सभी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीतिशास्त्र के दायरे में आते हैं।

वैश्वीकरण (Globalisation) ने दुनिया भर के देशों के बीच की बाधाओं को कम कर दिया और व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिए मूल्यों के सार्वभौमिकरण (Universalization) की भी माँग की। वाणिज्यिक क्षेत्र में व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए सार्वभौमिक मूल्यों को माना गया। इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार परिप्रेक्ष्य में नैतिक मुद्दे सामने आए, जो आज तक अज्ञात थे।

व्यवसाय के अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में कई नए व्यावहारिक मुद्दे सामने आए। इस क्षेत्र में नैतिक मूल्यों की सांस्कृतिक सापेक्षता जैसे सैद्धांतिक मुद्दों पर अधिक बल दिया जाता है। अन्य, पुराने मुद्दों को भी यहाँ समूहीकृत किया जा सकता है। मुद्दों और उपक्षेत्रों में शामिल हैं:

- अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक व्यवहार के आधार के रूप में सार्वभौमिक मूल्यों (universal values) की खोज।
- विभिन्न देशों में व्यापार नैतिक परंपराओं (Business Ethical Traditions) की तुलना। साथ ही, उनकी संबंधित GDP और भ्रष्टाचार रैंकिंग के आधार पर तुलना।
- विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों से व्यापार नैतिक परंपराओं की तुलना।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लेन-देन से उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दे; उदाहरण के लिए, दवा उद्योग में बायोप्रोस्पेक्टिंग (Bioprospecting) और बायोपाइरेसी (Biopiracy), व्यापार युद्ध, हस्तांतरण मूल्य निर्धारण (Transfer Pricing) आदि।
- वैश्वीकरण और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद (Cultural Imperialism) जैसे मुद्दे।
- वैश्विक मानकों में भिन्नता; उदाहरण के लिए- बाल श्रम का उपयोग।

- जिस तरह से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अंतर्राष्ट्रीय मतभेदों का लाभ उठाती हैं, जैसे- उत्पादन (जैसे- कपड़े) और सेवाओं (जैसे- कॉल सेंटर) को कम वेतन वाले देशों को आउटसोर्स करना।
- परिया राज्यों (Pariah States) के साथ अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य की अनुमति; (एक ऐसा राष्ट्र, जिसे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में बहिष्कृत माना जाता है। एक परिया राज्य को अंतर्राष्ट्रीय अलगाव, प्रतिबंधों या यहाँ तक कि उन राष्ट्रों द्वारा आक्रमण का सामना करना पड़ सकता है, जो इसकी नीतियों, कार्यों या इसके अस्तित्व को अस्वीकार्य करते हैं।)
- विदेशी देश अकसर डंपिंग (Dumping) को प्रतिस्पर्धी ख़तरे के रूप में इस्तेमाल करते हैं और उत्पादों को उनके सामान्य मूल्य से कम क़ीमत पर बेचते हैं। इससे घरेलू बाज़ारों में समस्याएँ आ सकती हैं। इन बाज़ारों के लिए विदेशी बाज़ारों द्वारा निर्धारित मूल्य निर्धारण के साथ प्रतिस्पर्धा करना कठिन हो जाता है।

E. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नीतिशास्त्र (Ethics of Artificial Intelligence)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नीतिशास्त्र, रोबोट और अन्य कृत्रिम रूप से बुद्धिमान प्राणियों के लिए विशिष्ट प्रौद्योगिकी के नीतिशास्त्र का हिस्सा है। इसे सामान्यत: रोबोट नीतिशास्त्र (Robot Ethics) और मशीन नीतिशास्त्र (Machine Ethics) में विभाजित किया गया है:

(i) रोबोट नीतिशास्त्र (Robot Ethics)

रोबो-नीतिशास्त्र (रोबोट नीतिशास्त्र) अध्ययन का वह क्षेत्र है, जो इस बात से संबंधित है कि रोबोटों के लिए उनका नैतिक व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए क्या नियम बनाए जाने चाहिए और नैतिक रोबोटों को कैसे अभिकल्पित (Design) किया जाए।

उनकी उत्पत्ति के बारे में जानकारी विज्ञान कथा लेखक आईजैक असिमोव द्वारा रोबोटिक्स के तीन नियमों से प्राप्त की गई है।

पहला नियम (First Law): एक रोबोट किसी भी प्रकार से मनुष्य को हानि नहीं पहुँचा सकता, या किसी भी हरकत के द्वारा मनुष्यों को हानि नहीं पहुँचने दे सकता।

दूसरा नियम (Second Law): रोबोटों को प्रथम नियम का उल्लंघन किए बिना मनुष्यों के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

तीसरा नियम (Third Law): रोबोटों को पहले और दूसरे कानून का उल्लंघन किए बिना अपनी सुरक्षा करनी चाहिए।

रोबोटिक्स के क्षेत्र में गंभीर नैतिक ध्यान (Ethical Attention) और चिंतन की आवश्यकता है, क्योंकि:

1. **व्यापक अनुप्रयोग** (Wider Application): रोबोट का उपयोग शुरू में अधिकतर औद्योगिक और सैन्य अनुप्रयोगों के लिए किया जाता था, लेकिन अब वे परिवहन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और घरेलू वातावरण जैसे अन्य क्षेत्रों में भी उभर रहे हैं।
2. **निर्धारणात्मक से संज्ञानात्मक** (Deterministic to Cognitive): रोबोट चलाने वाले एल्गोरिदम के आधार पर, उन्हें निम्नानुसार विभाजित किया जा सकता है:
   - **निर्धारणात्मक रोबोट** (Deterministic Robot): उनका व्यवहार पूर्व-क्रमादेशित (Pre-programmed) और अनिवार्य रूप से निर्धारित होता है।
   - **संज्ञानात्मक रोबोट** (Cognitive Robot): हालाँकि, एआई-आधारित, संज्ञानात्मक रोबोट पिछले अनुभवों से सीखेंगे और अपने एल्गोरिदम की स्वयं गणना करेंगे, इसलिए उनका व्यवहार पूरी तरह से अनुमानित नहीं होगा।

विभिन्न क्षेत्रों में रोबोट के उपयोग के संबंध में नैतिक चिंताएँ (Ethical Concerns):

(ii) कंप्यूटर नीतिशास्त्र (Computer Ethics)

कंप्यूटर नीतिशास्त्र का संबंध इस बात से है कि कंप्यूटिंग पेशेवरों को पेशेवर और सामाजिक आचरण के संबंध में निर्णय कैसे लेना चाहिए। उदाहरण के लिए, चूँकि कॉपीराइट इलेक्ट्रॉनिक सामग्री की नकल करना आसान है, अत: कंप्यूटर नीतिशास्त्र सुझाव देगा कि लेखक की स्वीकृति के बिना ऐसा करना गलत है। और चूँकि कंप्यूटर सिस्टम पर किसी की व्यक्तिगत जानकारी तक पहुँच संभव हो सकती है, अत: कंप्यूटर नीतिशास्त्र सलाह देगा कि ऐसी कार्यवाही अनैतिक है।

मार्गरेट ऐनी पियर्स (जॉर्जिया दक्षिणी विश्वविद्यालय में गणित और कंप्यूटर विभाग में एक प्रोफ़ेसर) ने कंप्यूटर प्रौद्योगिकी और उपयोग से संबंधित नैतिक निर्णयों को तीन प्राथमिक प्रभावों में वर्गीकृत किया है:

1. व्यक्ति की अपना निजी नैतिक संहिता।
2. कार्यस्थल पर मौजूद नैतिक आचरण (Ethical Conduct) की कोई अनौपचारिक संहिता।
3. आचार संहिता का औपचारिक संहिता के संपर्क में आना।

साइबर अपराध के मुद्दों की बढ़ती संख्या के कारण कंप्यूटर नीतिशास्त्र तेज़ी से महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। इंटरनेट की व्यापक लोकप्रियता और उपयोग ने कई साइबर अपराध मुद्दों व उपयोगकर्ता की गोपनीयता के बारे में चिंताओं को जन्म दिया है। दूसरों की निजता में सेंध लगाने के लिए विभिन्न कंप्यूटिंग अनुप्रयोगों के साथ छेड़छाड़ की जाती है। मैलवेयर, स्पाइवेयर, फ्रीवेयर और ब्राउजर कुकी (Browser Cookie) उपयोग कुछ कुख्यात कंप्यूटिंग अनुप्रयोग हैं, जिन्होंने प्रौद्योगिकी में नैतिक व्यवहार के महत्त्व की बहस को प्रेरित किया है।

कंप्यूटर नीतिशास्त्र के कुछ सामान्य मुद्दों में शामिल हैं:

- बौद्धिक संपदा अधिकार (जैसे कॉपीराइट इलेक्ट्रॉनिक सामग्री)
- गोपनीयता संबंधी चिंताएँ

- समाज पर कंप्यूटर का प्रभाव
- स्पैमिंग (Spamming)
- हैकिंग
- अभद्र भाषा का प्रयोग
- पोर्नोग्राफ़ी

F. अंतर्राष्ट्रीय नीतिशास्त्र (International Ethics)

'अंतर्राष्ट्रीय नीतिशास्त्र' अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांत का एक क्षेत्र है, जो वैश्वीकरण के युग में राज्यों के बीच नैतिक दायित्वों की सीमा और दायरे से संबंधित है।

अंतर्राष्ट्रीय नीतिशास्त्र से तात्पर्य उस कल्याण से है, जो अंतर्राष्ट्रीय संवाद, आदान-प्रदान, संबंध हमारे ग्रह पृथ्वी और सभी जीवन रूपों में ला सकते हैं और जिसे अमित्रतापूर्वक (Unfriendly), शत्रुतापूर्ण (Hostile), असहयोगी व्यवहार (Uncooperative Behavior) से नुकसान हो सकता है। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता का ज्ञान हमें अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में होने वाले लाभ और हानि, सही और गलत का आकलन करने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र सभी सदस्य देशों द्वारा मैत्रीपूर्ण और सहयोगात्मक तथा शांति-संबंधी मानवीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यों के विभिन्न सिद्धांतों को बढ़ावा दे रहा है। राष्ट्रों का यह समुदाय, जो अन्य राष्ट्रों और उनके हितों का सम्मान करने के लिए खड़ा है, उसे स्वयं उन प्रमुख राष्ट्रों द्वारा नुकसान पहुँचाया जाता है, जो अपने हितों और इच्छा को अन्य गरीब विकासशील राष्ट्रों पर थोपना चाहते हैं, जो समान व्यवहार किए बिना सहयोग करने के इच्छुक नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय नीतिशास्त्र को इस रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है, जो किसी को अच्छे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को आकार देने और निर्माण में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम बनाती है। प्रत्येक देश का अंतर्राष्ट्रीय समुदाय संबंधी दृष्टिकोण तथा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की वास्तविकता, हमें इस बात पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के निर्माण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में निवेश की प्रकृति और उद्देश्य क्या होना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता का दर्शन (Philosophy of International Ethics)

(i) यथार्थवाद (Realism)

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, यथार्थवाद मानता है कि एकमात्र चीज़, जो वास्तव में मायने रखती है, वह 'शक्ति' (Power) है; अर्थात् किसी देश के पास कितनी शक्ति है। इसके अलावा, और कुछ मायने नहीं रखता है; नैतिकता, नीतिशास्त्र, कानून और राजनीतिक प्रणालियाँ, कानूनी प्रणालियाँ, सांस्कृतिक प्रणालियाँ सभी अप्रासंगिक होते हैं। 'यथार्थवाद' एकल वास्तविकता, अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय शक्ति पर केंद्रित होता है। यह वह शक्ति है, जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को प्रभावित कर सकता है और उसकी नियति को उस दिशा में निर्देशित कर सकता है और आकार दे सकता है, जैसा वह चाहता है, अर्थात् वह दूसरे की कीमत पर अपने हितों की सेवा और रक्षा करने की एक प्रकार अंतर्निहित दासता का प्रतिनिधित्व करता है। तर्क यह है कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मानव स्वभाव ऐसा है कि किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता है और यहाँ प्रत्येक, दूसरे पर हावी होना चाहता है। या तो एक देश दूसरे पर हावी होगा या दूसरा पहले पर हावी होने की कोशिश करेगा, इसलिए प्रभुत्वशाली या शक्तिशाली देश बनना बेहतर है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र या अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण सामान्य या साझा नैतिकता के लिए किसी भी भूमिका को अस्वीकार करना है, और एक नैतिक रूप से तटस्थ क्षेत्र या एक नैतिकता मुक्त क्षेत्र बनाना है, जिसे उसकी शक्ति से परिपूर्ण किया जा सकता है, जो प्रभुत्वशाली है।

(ii) आदर्शवाद (Idealism)

आदर्शवाद आवश्यक रूप से शक्ति या शक्ति अंतराल या शक्ति संतुलन पर ध्यान केंद्रित न करके, राष्ट्रों के बीच 'साझा हितों' (Common Interests) पर ध्यान केंद्रित करता है। यह आदर्शवादी मूल्यों (Idealist Values) के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र का निर्माण करना चाहता है, जो किसी भी अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों और समस्याओं में भाग लेने वाले राष्ट्रों के लिए साझा हित होते हैं। साझा हितों पर निर्मित आदर्शवाद यथार्थवाद की एकतरफा शक्ति की तुलना में अधिक शक्तिशाली प्रतीत होता है और इसलिए इसमें विचार, शब्द और कर्म व दार्शनिक विचार के रूप में यथार्थवाद को प्रतिस्थापित करने की क्षमता हो सकती है।

'आदर्शवाद' राष्ट्रों के बीच व्यापार हितों को साझा हितों के रूप में और बेहतर, वर्धमान (Growing) और पारस्परिक रूप से लाभकारी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के निर्माण के लिए मंच के रूप में इंगित करता है। अंतर्राष्ट्रीय और वैश्विक बाज़ार का उदय और राष्ट्रों के बीच बढ़ती परस्पर निर्भरता को आदर्शवाद द्वारा सहायता और समर्थन मिलता हुआ दिखाया गया है। आदर्शवाद में, अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली, अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र नियमों, कानूनों और संस्थाओं का पालन करते हैं। आदर्शवाद में, इस प्रकार नीतिशास्त्र, नैतिकता, कानून, कानूनी प्रणाली, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ सभी का केंद्रीय स्थान होता है। इस प्रकार, आदर्शवाद यथार्थवाद से बिल्कुल अलग है, जो केवल शक्ति पर बल देता है। इससे दुनिया कम नाटकीय और कम ख़तरनाक हो जाती है, भले ही संघर्ष समाप्त न हुआ हो।

अंतर्राष्ट्रीय संधियों, संयुक्त राष्ट्र संगठनों और प्रणाली की केंद्रीय भूमिका होती है और आदर्शवाद का समर्थन करते हैं तथा आदर्शवादी चिंतन इसका समर्थन करती है।

(iii) रचनात्मकतावाद या रचनावाद (Constructivism)

'रचनात्मकतावाद' अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र को आकार देने के लिए विदेश नीति, राजनयिक पहल आदि जैसी चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करता है, जहाँ किसी देश का विश्वसनीय प्रभाव होता है। इन चीज़ों में घरेलू राजनीति पर और उन लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए विदेश नीति को कैसे आकार दिया जाए, इन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह घरेलू राजनीतिक शासन व्यवस्थाओं को अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाही का केंद्र तथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाही व उसके कार्यान्वियन का आरंभकर्ता मानता है, अत: यह अधिक व्यावहारिक है।

मूल रूप से रचनात्मकतावाद राष्ट्रीय पहचान और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर इसके निर्माण के प्रभाव की अनुमति देता है। प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक राज्य विभिन्न तरीकों से राष्ट्रीय पहचान की भावना पैदा करता है तथा ऐतिहासिक व सांस्कृतिक समारोहों और साधनों के माध्यम से इसका पोषण करता है। इस प्रकार, राष्ट्रीय पहचान का निर्माण होता है और कहा जाता है कि यह राष्ट्रों के परस्पर संपर्क के तरीके को प्रभावित करती है। पहचान की राजनीति के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र और संबंधों में एक रुचि या आयाम जोड़ा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र भी एक ऐसा स्थान हो सकता है, जहाँ विभिन्न पहचानें, पहचान सम्मान (Identity Respects) और आदान-प्रदान के माध्यम से लोगों के बीच अधिक मानवीय समझ में बदल सकती हैं।

रचनात्मकतावाद दर्शाता है कि राष्ट्र अपनी पहचान, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय संप्रभुता के लिए किसी भी ख़तरे का प्रतिरोध करते हैं। चाहे वे वास्तविक बिल्कुल भी न हों। यह दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने या विश्व प्रणालियों या विश्व व्यवस्था को बदलने के प्रयासों के विरुद्ध कार्य करता है। यदि राष्ट्रीय पहचान का सम्मान नहीं किया जाता है, तो अन्य देशों द्वारा किए गए ऐसे सभी प्रयासों, चाहे वे कितने भी तर्कसंगत क्यों न हों, का विरोध किया जाएगा। किसी भी राष्ट्र द्वारा दुनिया को बदलने की सभी इच्छाओं का अन्य राष्ट्रों की पहचान, राजनीति और रचनात्मकतावाद की वेदी पर बलिदान दे दिया जाता है। रचनात्मकतावाद राष्ट्रीय पहचान (राष्ट्रीय हित के बजाय) पर ध्यान केंद्रित करने के माध्यम से व्यक्तिगत राष्ट्रों (Individual Nations) को अधिक शक्ति देता है, जो राजनीतिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अन्य देशों के साथ कम संबंध रखने के बजाय, अपनी पहचान को आगे बढ़ाने और बढ़ावा देने का एक अधिक शक्तिशाली साधन है।

1.6 सार्वजनिक और निजी संबंधों में नीतिशास्त्र (Ethics in Public and Private Relationships)

प्रत्येक व्यक्ति समाज में विभिन्न भूमिकाएँ निभाता है। हम पिता, माता, बहन, मित्र, शिक्षक, छात्र, डॉक्टर, नेता, सहकर्मी जैसी विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हैं। प्रत्येक सामाजिक भूमिका के साथ, व्यक्ति स्वयं की और दूसरों की अपेक्षाओं के अनुरूप अपने व्यवहार में बदलाव करता है। ऐसी भूमिकाएँ निभाते समय हम सही या गलत, अच्छे या बुरे मानव व्यवहार जैसी अवधारणाओं के बारे में सोचते हैं। इस प्रकार, नैतिकता हमें ऐसी भूमिकाएँ निभाते समय सही या गलत व्यवहार का निर्णय लेने में मदद कर सकती है। निजी और सार्वजनिक संबंधों में हमारी भूमिकाएँ भिन्न हो सकती हैं और इस प्रकार, निजी व सार्वजनिक संबंधों में हमारा मार्गदर्शन करने वाले नैतिक मानक हो सकते हैं।

A. निजी संबंध (Private Relationships)

प्रत्येक निजी संबंध का अपना अपूरणीय (Irreplaceable) मूल्य होता है। इनमें से प्रत्येक का अपना इतिहास, महत्त्व, चरित्र और अंतर्निहित व स्पष्ट समझ का समूह होता है। निजी संबंधों में नीतिशास्त्र सामान्य तौर पर व्यक्तिगत गुणों, सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों, धर्म, सामाजिक मानदंडों और देश के कानून द्वारा निर्देशित होता है। इसलिए, उनमें सीमित प्रभावशाली कारक शामिल होते हैं।

B. सार्वजनिक संबंध (Public Relationships)

संगठनात्मक सहयोगियों, राजनेताओं, अपरिचितों और किसी की अंतरंगता (Intimacy) की अपेक्षाकृत संकीर्ण दायरे से बाहर के लोगों के रूप में सार्वजनिक संबंध अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। यह एक प्रबंधन कार्य है, जो सार्वजनिक दृष्टिकोण की निगरानी और मूल्यांकन करता है तथा एक संगठन व उसकी जनता के बीच आपसी संबंधों और समझ को बनाए रखता है।

सार्वजनिक और निजी संबंध: एक तुलना
(Public and Private Relationships: A Comparison)

निजी संबंध (Private Relationships)	सार्वजनिक संबंध (Public Relationships)
ये अधिकांशत: विरासत में मिले होते हैं, जैसे आपकी बहन, भाई।	ये हमेशा विरासत में नहीं मिलते, उदाहरण के लिए आपका बॉस, नियोक्ता आदि।
ये अधिकतर स्थायी होते हैं। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि कोई अपने भाई-बहन या माता-पिता को अस्वीकार करना चाहे, लेकिन हम शायद ही कभी ऐसा करते हैं।	ये स्थायी नहीं होते हैं। एक अप्रसन्न ग्राहक एक ही दुकान पर नहीं जा सकता है।
ये अधिक घनिष्ठ और सुरक्षित होते हैं।	ये संरक्षित और अपेक्षाकृत असुरक्षित होते हैं।
ये कम संख्या में लोगों तक सीमित होते हैं।	इनमें बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं।
आपके कार्य आंतरिक नियंत्रण द्वारा निर्देशित होते हैं।	आपके कार्य बाहरी नियंत्रण द्वारा निर्देशित होते हैं, जैसे- अपने बॉस की आज्ञा मानने की बाध्यता।

सार्वजनिक और निजी संबंध: एक तुलना (Public and Private Relationships: A Comparison)	
निजी संबंध (Private Relationships)	**सार्वजनिक संबंध (Public Relationships)**
पसंद किए जाने की आवश्यकता, निष्ठा की अपेक्षा, परोपकारी आत्म-समर्पण (Altruistic Self-giving)।	सम्मान की आवश्यकता, जवाबदेही की अपेक्षा, यथानुकूल/स्व-हित (Quid Pro Quo/Self-interest) का त्याग।
जिन लोगों के साथ हम व्यवहार करते हैं, उनमें हमारे साथ समानताएँ या समतुल्यताएँ होती हैं, जैसे- हमारे मूल्य, परंपराएँ।	हम पूरी तरह से अलग-अलग प्रकार के लोगों से अंतःक्रिया कर सकते हैं, जिनकी हमारे साथ बहुत कम समानता हो सकती है।

जनसंपर्क में नीतिशास्त्र (Ethics in Public Relation)

जनसंपर्क में नीतिशास्त्र सत्ता द्वारा संचालित होता है। उनमें विरोधाभासी मूल्य शामिल होते हैं और जनसंपर्क में नैतिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं। सत्ता को बनाए रखने, व्यवस्था के बारे में लोगों के बीच विश्वास विकसित करने और समाज की सामाजिक भलाई को पूरा करने के लिए सार्वजनिक परिदृश्य में नैतिक मानकों का पालन करना महत्त्वपूर्ण होता है।

जनसंपर्क में, सार्वजनिक अधिकारियों को भूमिकाओं के 4 प्राथमिक समूहों का सामना करना पड़ता है, जो हैं:

- उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक क्षेत्र में उनकी भूमिका।
- एक पेशेवर के रूप में उनकी भूमिका।
- उनके अधिकार-क्षेत्र, समुदाय और कार्य प्रभाव के प्रति उनकी भूमिका।
- बड़े पैमाने पर समाज और मानवता के प्रति उनकी भूमिका।

लोक सेवक को भूमिकाओं के समूह के साथ तालमेल बिठाना होगा। समूह में प्रत्येक भूमिका की अलग-अलग चिंताएँ, मूल्य और व्यवहार के मानक होते हैं। प्रत्येक को नैतिक दावे (Ethical Claim) के मिश्रण से चिह्नित किया जाता है। कुछ 'कर्त्तव्य' उत्तरदायित्व और अनौपचारिक होते हैं, जबकि अन्य दायित्व और औपचारिक होते हैं।

सार्वजनिक सेवा की भूमिका कानूनी और संवैधानिक दायित्वों का आह्वान करती है, जिसका उल्लंघन होने पर कानूनी प्रतिबंध और दंड मिलते हैं। इस प्रकार, एक लोक सेवक को इन विभिन्न भूमिकाओं का सामना करना पड़ता है, जो कई बार एक-दूसरे के साथ संघर्ष करती हैं।

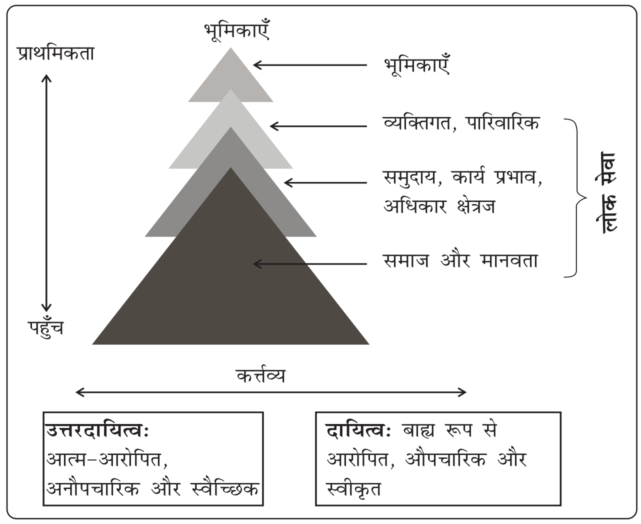

व्यक्तिगत विश्वास बनाम सार्वजनिक कर्त्तव्य (Personal Beliefs vs. Public Duty)

ये ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं, जब किसी लोक सेवक की व्यक्तिगत मान्यताएँ/मूल्य उसके सार्वजनिक कर्त्तव्य/संगठनात्मक मूल्यों/संवैधानिक कानूनों से असहमत होते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति शराब का सेवन नहीं करता हो, लेकिन उसे राज्य के शराब-आबकारी विभाग में एक अधिकारी के रूप में काम करना पड़ सकता है।

किसी व्यक्ति का धर्म उसे मांसाहारी भोजन खाने से रोक सकता है, लेकिन एक पुलिस अधिकारी के रूप में उसे बूचड़खानों (Slaughterhouses) को संरक्षण देना पड़ सकता है।